ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०७५ मई २०१८

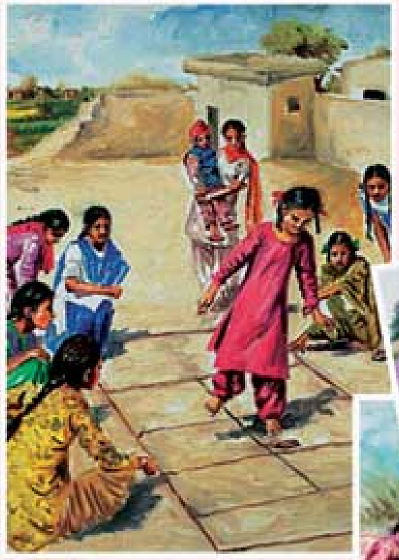

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ **29** अप्रैल शाम 3:00 बजे

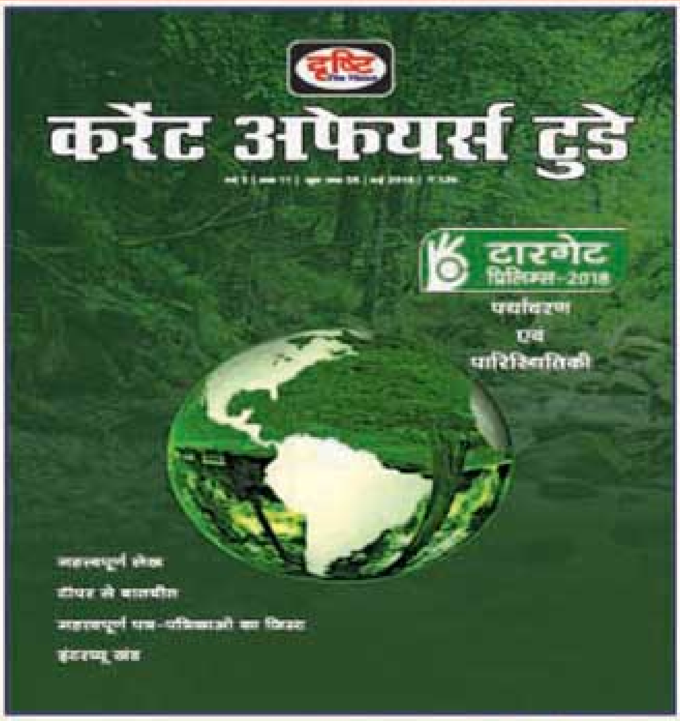

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें– (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

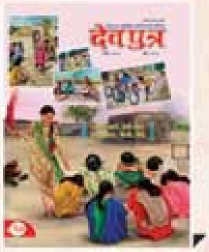

ज्येष्ठ २०७५ ▪ वर्ष ३८
मई २०१८ ▪ अंक ११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक (कम से कम १० अंक लेने पर)	:	१३० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या – 53003591451
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ हो गए हैं। पढ़ाई से थोड़ा आराम भी मिला होगा। एक ओर परीक्षा परिणाम की प्रसन्नता होगी तो दूसरी ओर नई कक्षा, नई पुस्तकों की जिज्ञासा भी। अब यह याद दिलाने की आवश्यकता तो नहीं ना कि आपने अपनी गत वर्ष की सभी पुस्तकें सहेज कर रखी होंगी। इन पुस्तकों को आप अपने से छोटी कक्षा वालों को सौंपेंगे। आपकी जितनी कॉपियाँ हैं उन सबके बचे हुए कोरे पन्ने निकालकर उनकी जिल्द बनाकर रफ कॉपी बना लीजिए। आपको पता है ना ये कागज पेड़ों से बनते हैं। इस तरह आप कई पेड़ कटने से बचा लेंगे।

पिछले दिनों व्हाट्स एप्प पर एक चित्र देखा था जिसमें एक लकड़ी काटने वाला एक पेड़ की छाँह में विश्राम कर रहा है। आसपास ढेर सारे पेड़ कटे पड़े हैं। नीचे लिखा था- ''लकड़हारा पेड़ काटते थक गया तो एक पेड़ की छाँह में आराम करने लगा।''

हम सब उस लकड़हारे से थोड़े ही अलग हैं। हम जब कागज व्यर्थ करते हैं तो हमें कहाँ उस समय किसी कटते पेड़ की कराह सुनाई देती है? आशा है आप सब ये दो काम भी याद से कर लेंगे तो अनेक पेड़ों को नया जीवन दे देंगे।

एक बात और गर्मी की छुट्टियों में अपने किन्हीं ऐसे रिश्तेदार के यहाँ अवश्य जाइए जो गाँव में रहते हों। वहाँ के प्राकृतिक जीवन में ऐसा क्या है जो हमारे शहर में नहीं? एक छोटा सा यात्रा वृत्तांत अवश्य तैयार करना अपनी उस गाँव की यात्रा का। अच्छे यात्रा वृत्तांत को देवपुत्र में स्थान देकर हमें प्रसन्नता होगी।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- बुद्धू लौट आया - डॉ. फकीरचन्द शुक्ला ०८
- मोबाइल से छुट्टी - डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' ११
- गर्मी आ गई - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' २४
- मास्टर दीननाथ - डॉ. राजीव गुप्ता ३०
- पिताजी आप बहुत... - सुमन ओबेराय ३६

प्रसंग

- श्री गुरुजी... -श्यामसुन्दर सुमन ३४

कविता

- माँ अहिल्या - हरीश दुबे ०५
- बचपन नाचे - डॉ. रामनिवास मानव १४
- बद अच्छा बदनाम बुरा - गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण' १६
- नाना के गाँव जाना - पद्मा चौगाँवकर १७
- ग्रीष्म गीत - राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण' २५
- देश हमारा सबसे न्यारा - डॉ. राजेन्द्र पंजियार ३२
- गर्मी आई - सुषमा दुबे ३३
- फिर आई छुट्टियाँ - डॉ. हरीश निगम ४२
- ठण्डा पानी पीलो - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ४७

आलेख

- पुलों की कहानी - डॉ. बानो सरताज २२

नाटिका

- भारत भगिनी और... - लखेश्वर चंद्रवंशी 'लखेश' ०६

चित्रकथा

- डाक्टर की सलाह - देवांशु वत्स ३५
- कल्पना से अनूठी पृथ्वी - संकेत गोस्वामी ३८
- घर की बात - देवांशु वत्स ४६

बाल प्रस्तुति

- शब्द रस - भारती मसानिया ४४
- मेहनत का फल - अभिषेक शर्मा ४५

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (१६) - १८
- संस्कृति प्रश्नमाला - २०
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा' २७
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २९
- आपकी पाती ३४
- मुस्कराइए जी! - दिलीप भाटिया ४४
- पुस्तक परिचय - ५०

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

।। १७ मई : देवी अहिल्या जयंती ।।

माँ अहिल्या

कविता : हरीश दुबे

माँ अहिल्या देवी हैं अवतार हैं
हर तरफ उनकी ही जय-जयकार है

लोग मंगल गीत उनके गा रहे
उन्हीं के दीप जलाए जा रहे
पुण्य की साकार प्रतिमा वे बनीं
हम सभी आशीष उनसे पा रहे

ज्ञान गौरव से भरा भण्डार है
हर तरफ उनकी ही जय-जयकार है

हाथ में शंकर लिए चलती रहीं
जो मशालों सी सदा जलती रहीं
अनाचारों को मिटाने के लिए
देश में फौलाद सी ढलती रहीं

आज भी जीवंत वो संसार है
हर तरफ उनकी ही जय जयकार है

न्याय की आभा से आभासित महल
कला मर्मज्ञों से आनंदित महल
सादगी और शौर्य का संगम लिए
महेश्वर का पुण्य उल्लसित महल

लौह आयुधों की नित टंकार है
हर तरफ उनकी ही जय-जयकार है।

• महेश्वर (म.प्र.)

भारत भगिनी और गुरुदेव

नाटिका : लखेश्वर चंद्रवंशी 'लखेश'

(विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर) अपने अध्ययन कक्ष में बैठे, कुछ पढ़ रहे हैं। किसी के आने की आहट सुनाई देती है। भगिनी निवेदिता का प्रवेश)

भगिनी – (द्वार पर हाथ जोड़कर) प्रणाम, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ? (एक तेजस्वी अंग्रेज युवती के आगमन पर रवीन्द्रनाथ को आश्चर्य हुआ। वे थोड़ी देर भगिनी निवेदिता के तेजस्वी मुखमंडल को निहारते रहे... और फिर बोले)

रवीन्द्रनाथ – हाँ, हाँ, आइये, आपका स्वागत है।

(रवीन्द्रनाथ अपनी कुर्सी से उठ खड़े होते हैं।)

बैठिए...(रुककर) कहिये, कैसे आना हुआ आपका? आप कौन हैं देवी और कहाँ से आई है?

भगिनी – मेरा नाम मारग्रेट एलीजाबेथ नोबुल है। मैं आयरलैंड से आई हूँ। यहाँ बाग बाजार परिसर में मैं बालिकाओं के लिए एक विद्यालय चलाती हूँ। स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि स्त्रियों के शिक्षित होने पर ही भारत का उत्थान होगा। मैं स्वामी जी की प्रेरणा से यहाँ अपने देशवासियों की सेवा करने के लिए आई हूँ।

(एक विदेशी ईसाई महिला द्वारा भारत को अपना कहने पर रवीन्द्रनाथ पुनः आश्चर्यचकित हो जाते हैं और कुछ सोचते लगते हैं।)

भगिनी – आपकी कविताओं की प्रशंसा दुनियाभर में हो रही हैं। आपके विचारों ने अनगिनत लोगों के हृदयों को प्रभावित किया है। अब जब मैं यहां आ ही गई हूँ तो सोचा... चलो, आज विश्वकवि के दर्शन कर लूँ।

रवीन्द्रनाथ – (एकाएक अपनी कन्या को पुकारा) बेटी, जरा यहाँ आओ। देखो, अपने घर विदेश से बड़ी विद्वान शिक्षिका आई हैं। (पिताजी की आवाज सुनकर बेटी आती है और अपने पिता की कुर्सी से टिककर खड़ी हो जाती है।)

रवीन्द्रनाथ – ये मेरी बेटी है... और आप यहाँ बालिका विद्यालय चला रही है, यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आप एक कुशल शिक्षिका हैं। आपका अंग्रेजी भाषा पर प्रभुत्व है। आप मेरी बेटी की शिक्षका बनकर इसे

अंग्रेजी साहित्य, अंग्रेजी संस्कृति तथा अपने समाज के आचार–विचार व सभ्यता में दीक्षित कीजिए।

(रवीन्द्रनाथ के इस कथन को सुनते ही भगिनी निवेदिता भौचक्की रह गईं। विश्वकवि की इस अंग्रेजी सभ्यता के प्रति भावना को देखकर भगिनी के मन में वेदना जाग गई। रवीन्द्रनाथ की कन्या को स्नेहपूर्ण ढंग से अपने साथ लेकर भगिनी बोल उठीं...)

भगिनी – छिः छिः ऐसी बात मत कहिये, रवीन्द्र बाबू! यह एक हिन्दू कन्या है। इसे अंग्रेजी मेम बनाने की भूल मत करिये। इन विचारों से अलग हटिए। इसे संस्कार तो इस देश की संस्कृति के ही मिलने चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि भारत में स्त्रियों का आदर्श तो सीता, सावित्री और दमयन्ती ही होने चाहिए।

(भगिनी निवेदिता के इन ओजस्वी वचनों को सुनकर रवीन्द्रनाथ स्तब्ध रह गए और विचार करने लगे।)

रवीन्द्रनाथ – (रुककर) सचमुच, आपका कथन उचित है। आप कोई साधारण शिक्षिका नहीं हैं। स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा से अपने जीवन को भारत माता के चरणों में अर्पित करने वाली आप महान व्यक्तित्व हैं, और मुझे खेद है कि मैंने आपको केवल एक विदेशी, ईसाई और अंग्रेजी शिक्षिका समझा। हे देवि! आप सचमुच भारत भगिनी हैं। आप जिस कार्य के लिए भारत आई है, मेरा विश्वास है कि उसमें आप अवश्य ही सफल होंगी। आपके इस सेवा कार्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ... आपके इस कार्य में मैं भी सहयोग दूँगा।

भगिनी – रवीन्द्रबाबू! आज भारतवासियों को आप जैसह विभूतियों की प्रेरणा व सहयोग की आवश्यकता है। हमें सम्पूर्ण भारत वर्ष में भारतभक्ति का अलख जगाना है। स्वामी विवेकानंद जी ने देश के युवाओं से आह्वान किया है, वीर बनो, श्रद्धावान बनो। आज भारत को इसी की आवश्यकता है। हमें देशवासियों के मन में अपने भारत देश की महान संस्कृति, हिन्दू धर्म और परम्परा के प्रति श्रद्धा का भाव जाग्रत करना है।

भागिनी – प्रणाम, तो अब मैं चलती हूँ, मुझे अपने विद्यालय की छात्राओं के घर जाना है।

रवीन्द्रनाथ – प्रणाम ...।

रवीन्द्रनाथ– आप सत्य कह रही हैं देवी। मैं आपके इस कार्य में साथ हूँ।

बुद्धू लौट आया

हास्य कहानी : डॉ. फकीरचंद शुक्ला

किसी गांव में बुद्धू नाम का एक लड़का रहता था जैसा नाम वैसा काम। घर वाले करने को कुछ कहते लेकिन वह कुछ और ही काम कर देता। माँ–पिताजी उसे खूब डांटते।

एक दिन तंग आकर वह घर से भाग गया। लेकिन भागने से पहले उसने अपने कुछ मित्रों को बता दिया था कि अब वह अमीर आदमी बनकर ही घर लौटेगा।

वह पैदल ही शहर चला आया। दिनभर पैदल चलने के कारण उसे खूब भूख लग आई थी। लेकिन उसकी जेब में तो फूटी कौडी भी न थी। वह ललचाई नजरों से दुकानों में रखी खाने–पीने की चीजों की ओर देखते हुए चला जा रहा था।

तभी एक भटूरे चने बचेने वाले ने उसे अपनी ओर देखते हुए देखा तो उससे पूछ लिया– ''क्यों, भाई कुछ खाना है?''

बुद्धु ने हाँ में सिर हिला दिया।

रेहड़ी वाले ने एक प्लेट भटूरे चने उसके सामने रख दिए। बुद्धू पलभर में ही खा गया। रेहड़ी वाले ने जब पूछा– ''और दूं?'' तो बुद्धू ने फिर हाँ में सिर हिला दिया। बुद्धू दूसरी प्लेट भी डकार गया। ठंडा पानी पीकर जब बुद्धू चले लगा तो रेहड़ी वाले ने तमतमा कर कहा– ''अरे कहाँ चल दिए? पैसे नहीं देने क्या?''

''पैसे? कैसे पैसे? बुद्धू ने हैरान होकर पूछा।

''क्यों भटूरे चने नहीं खाए क्या?''

''तुम्हीं ने तो पूछा था खाने को... सो मैंने खा लिए।''

''खा लिए के बच्चे, पैसे निकाल।'' रेहड़ी वाला गुस्से से चिल्लाया। मगर बुद्धू के पास पैसे होते तब देता न। रेहड़ी वाले ने ताबड़–तोड़ उसकी पिटाई शुरु कर दी।

शीघ्र ही वहां भीड़ इकट्ठा हो गई।

लोगों ने रेहड़ी वाले को समझाया कि बुद्धू को माफ कर दे। लेकिन वह तो उसे पीटता रहा। मगर कब तक पीटता रहता। आखिरकार उसे बुद्धू को छोड़ना ही पड़ा क्योंकि वह स्वयं ही पीट पीटकर थक गया था।

बुद्धू का अंग–अंग दर्द कर रहा था।

अंधेरा घिर आया था। बुद्धू को कुछ सूझ नहीं रहा था कि कहां जाए। वह वहीं एक मकान के आगे चबूतरे पर लेट गया और न जाने कब आंख लग गई।

अगली सुबह वह हड़बड़ा कर उठा बैठा। कोई उसे जोर–जोर से झकझोर रहा था।

''क्या घोड़े बेचकर सोया है? दूध नहीं लेना क्या?'' रामलाल उससे कह रहा था– ''फिर कहोगे देर से दूध लाया है।''

''कैसा दूध?'' बुद्धू ने हैरान होकर उसकी ओर देखा।

''तू कौन है? रामू कहां है?'' दरअसल रामलाल उसे रामू समझ बैठा था। तभी पड़ोसियों का लड़का बोल उठा– भैया! ये लोग शादी में गए हुए हैं। दो तीन दिन बाद आएंगे।''

रामलाल जब मुड़ने लगा तो अनायास ही उसने बुद्धू से पूछ लिया कि वह क्या करता है। बुद्धू ने उसे सब कुछ सच–सच बता दिया।

''अरे, दो–चार थप्पड़ पड़ गए तो क्या हुआ। भटूरे–चने भी तो तुमने ही खाये थे।'' रामलाल ने हंसते हुए कहा– ''खैर छोड़! अगर तुम चाहो तो मेरे पास काम कर सकते हो। रोटी–लत्ते के अलावा बीस रुपए महिना मिलेंगे।''

अंधा क्या चाहे, दो आंखें। बुद्धू तुरन्त मान गया।

उसी दिन से ही बुद्धू रामलाल दूध वाले के यहां

काम करने लगा। वह हर सुबह रामलाल के साथ लोगों के यहां दूध देने जाता।

रामलाल के यहाँ काम करते हुए उसे पंद्रह दिन के लगभग हो चले थे। एक दिन रामलाल बीमार पड़ गया। उसने बुद्धू से कहा ध्यान से सुन लो। हमारे पास दूध थोड़ा कम है। रास्ते में पास वाले कुंए से इसमें पानी मिला लेना है ताकि सभी घरों में दूध बराबर बांटा जा सके।''

बुद्धू ने हामी भर दी तथा साइकिल पर दूध का डोल लादकर चलने लगा। न जाने वह किन ख्यालों में खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कि कब पास वाला कुंआ निकल गया। काफी आगे निकलकर जब उसे अपनी भूल का अहसास हुआ तो वह पीछे लौट आया और दूध में पानी मिलाकर जब वह शहर पहुंचा तब तक दिन काफी चढ़ आया था। लोग उसे देखकर मारे क्रोध के तिलमिलाने लगे– ''यह समय है तुम्हारे आने का? मालूम नहीं हमें काम पर भी जाना है।''

बुद्धू ने भी अकड़कर जवाब दिया– ''इसमें मेरा क्या दोष? पानी मिलाना भूल गया था।''

''पानी मिलना भूल गया था? किस में पानी मिलाना भूल गया था?'' लोगों ने पूछा।

''दूध में, और भला किस में।'' बुद्धू ने भोलेपन में कहा– ''मालिक कहता था कि रास्ते में कुएं से पानी मिला लेना ताकि दूध बराबर बांटा जा सके, उसी से देर हो गई।''

मगर लोगों ने उसे पीटना शुरु कर लिदया– ''हमें पानी मिलाकर दूध बेचते हो। आने दो रामलाल को उसे हम पुलिस के हवाले करेंगे।''

लोगों ने बुद्धू की साइकिल भी छीन ली और जमकर पिटाई करके उसे वहां से भगा दिया।

बुद्धू रोता हुआ मालिक रामलाल के पास पहुंचा तथा सारी घटना उसे कह सुनाई। रामलाल ने तन–बदन में तो जैसे आग लग गई। उसने पास रखा हुआ लकड़ी का लट्ठ उठा लिया और पूरे जोर से बुद्धू की ओर भागता हुआ दौड़ा।

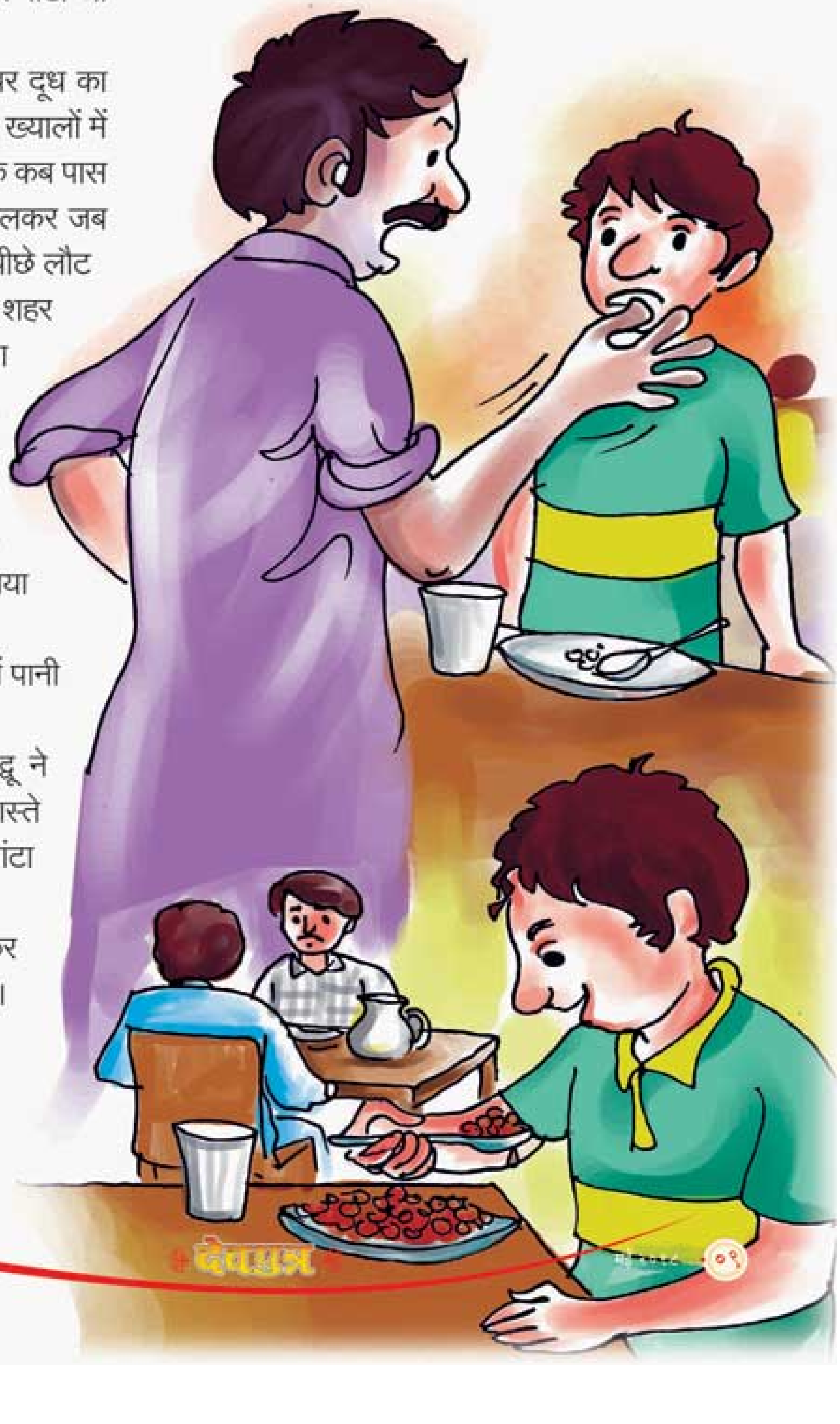

''हाय मै मर गया। चिल्लाता हुआ बुद्धू वहां से भागा। रामलाल भी उसके पीछे–पीछे भागा। मगर एक तो मोटे होने के कारण, दूसरे बुखार होने के कारण रामलाल भाग कर बुद्धू को न पकड़ पाया।

बुद्धू वहाँ से सरपट भागा। रास्ते में उसे ईख का एक खेत दिखा। वह खेत के भीतर जाकर छुप गया। मारे भूख तथा प्यास के उसका बुरा हाल था। पर फिर भी वह खेत में छिपा रहा, इस डर से कि कहीं रामलाल न आ जाए।

दिन ढल चुका था, अंधेरा छा गया था। बुद्धू ने एक गन्ना तोड़कर चूस लिया। वह अंधेरे में चलने लगा। तभी उसके चेहरे पर तेज रोशनी पड़ी। वह चौंक पड़ा।

''कौन है तू?'' एक रौबदार आवाज सुनाई दी।

लेकिन बुद्धू के कुछ कह पाने से पहले ही एक और व्यक्ति बोल उठा– ''घर से भागा हुआ लगता है। इसे भी साथ ही ले चलते हैं।

एक ने उसका बाजू पकड़ते हुए कहा– ''चल हमारे साथ।''

'' कहाँ जाना है?'' बुद्धू ने सहमते हुए पूछा।

''जिधर हम कहते हैं उधर चलता चल स्वयं ही पता चल जाएगा कि कहाँ जाना है और क्या करना है।'' और बुद्धू सहमा हुआ उनके साथ चलने लगा।

वास्तव में वे लोग चोर थे और कहीं से चोरी करके आ रहे थे। वे बुद्धू को अपने अड्डे पर ले गए।

बुद्धू ने उनके साथ रहते हुए कुछ दिन ही हुए थे कि एक दिन उन्होंने एक सेठ के यहां चोरी करने का फैसला किया। वे बुद्धू को भी साथ ले गए। उन्होंने सेठ की कोठी के पिछवाड़े से बुद्धू को छत पर चढ़ा दिया। बुद्धू को पहले से ही समझा दिया था कि वह धीरे–धीरे कमरे में जाए और जो भी वस्तु बढ़िया लगे उसे उठा लाए तथा मौका मिलते ही दरवाजे या खिड़की की सांकल खोल दे।

सभी चोर बुद्धू को छत पर चढ़ाने के पश्चात् इधर–उधर छिए गए।

बुद्धू धीरे–धीरे चलते हुए मकान के भीतर जा पहुंचा। कमरे में एक भारी भरकम वस्तु से बुद्धू का पांव टकरा गया। अंधेरे में ही उसने टटोल कर देखा एक बड़ी सी संदूक थी। बुद्धू ने सोचा कि अवश्य ही उसमें किमती सामान होगा। वह उसे उठाने का प्रयास करने लगा। मगर संदूक भारी था। बुद्धू उसे उठा नहीं पाया। उसे कुछ सूझ न रहा था कि क्या करे। अगर बिना उसे उठाए बाहर जाता है तो चोरों ने उसे जान से मार डालने की धमकी दी हुई थी।

बुद्धू कमरे में आहिस्ता आहिस्ता चलते हुए कोई तरकीब सोच रहा था कि कैसे उस संदूक को बाहर ले जा सके कि अचानक किसी वस्तु से वह टकरा गया। बुद्धू ने हाथ से छूकर देखा कोई व्यक्ति चारपाई पर सो रहा था। बुद्धू ने आव देखा न ताव झटपट उसे झकझोरना शुरु कर दिया। वह व्यक्ति हड़बड़ा कर उठ बैठा। अंधेरे में एक आकृति को देखकर पहले तो वह सकपका गया लेकिन फिर हौंसला करके उसने पूछ ही लिया– ''कौन हो तुम?''

''मेरे बारे में बाद में पूछना पहले यह संदूक मेरे सिरपर रखवा दे।'' बुद्धू ने गुस्से में आकर कहा।

मगर उस व्यक्ति ने ''चोर–चोर'' का शोर मचाना शुरु कर दिया। बाहर खड़े चोरों ने जब यह शोर सुना तो वे तुरंत वहां से नौ दो ग्यारह हो गए।

घर वालों ने बुद्धू को पकड़ लिया और जमकर उसकी पिटाई कर दी। वे लोग तो उसे पुलिस के हवाले करना चाहते थे मगर उसकी मूर्खता भरी कहानी सुनकर उसे पगला समझ कर छोड़ दिया।

वहां से छूटते ही बुद्धू सीधा अपने गाँव की ओर भागा। इससे तो गांव ही कहीं बेहतर है। वहां डांट–फटकार ही मिलती थी। उसने मन ही मन में सोचा।

...शायद ऐसे ही किसी बुद्धू के कारनामों को देखकर ही यह कहावत बनी हो– ''लौट के बुद्धू घर को आए।''

• लुधियाना (पंजाब)

।। १७ जून : विश्व संचार दिवस ।।

मोबाइल से छुट्टी

कहानी :डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

''माँ, माँ, जरा अपना मोबाईल तो देना मुझे, एक मिनिट कोई गेम खेल लूं। फिर वापस देता हूँ आपको।'' जैसे ही गौरव विद्यालय से घर लौटा, अपना बस्ता सोफे पर पटका, बिना हाथ मुँह धोए वह अपनी माँ का मोबाइल लेकर उसमें गेम खेलने बैठ गया। गौरव आठवीं कक्षा का एक होशियार और होनहार विद्यार्थी था, अपने माँ–पिता का इकलौता बालक, इसलिए घर में भी सभी का लाड़ला और चहेता। यूं तो वह पढ़ने में भी होशियार था इसलिए माँ भी सोच रही थी कि चलो ठीक है, अभी अभी थका हारा विद्यालय से घर लौटा है, इसलिए कुछ देर जी बहल जाएगा, वह मोबाइल देखकर अपने रसोई के कामों में व्यस्त हो गई। इधर गौरव मोबाइल पर गेम खेलते–खेलते इतना मगन हो गया कि कब शाम के चार से छः बज गए, कुछ पता ही नहीं चला। साढे छः के आस–पास जब पिताजी घर लौटे, तो गौरव

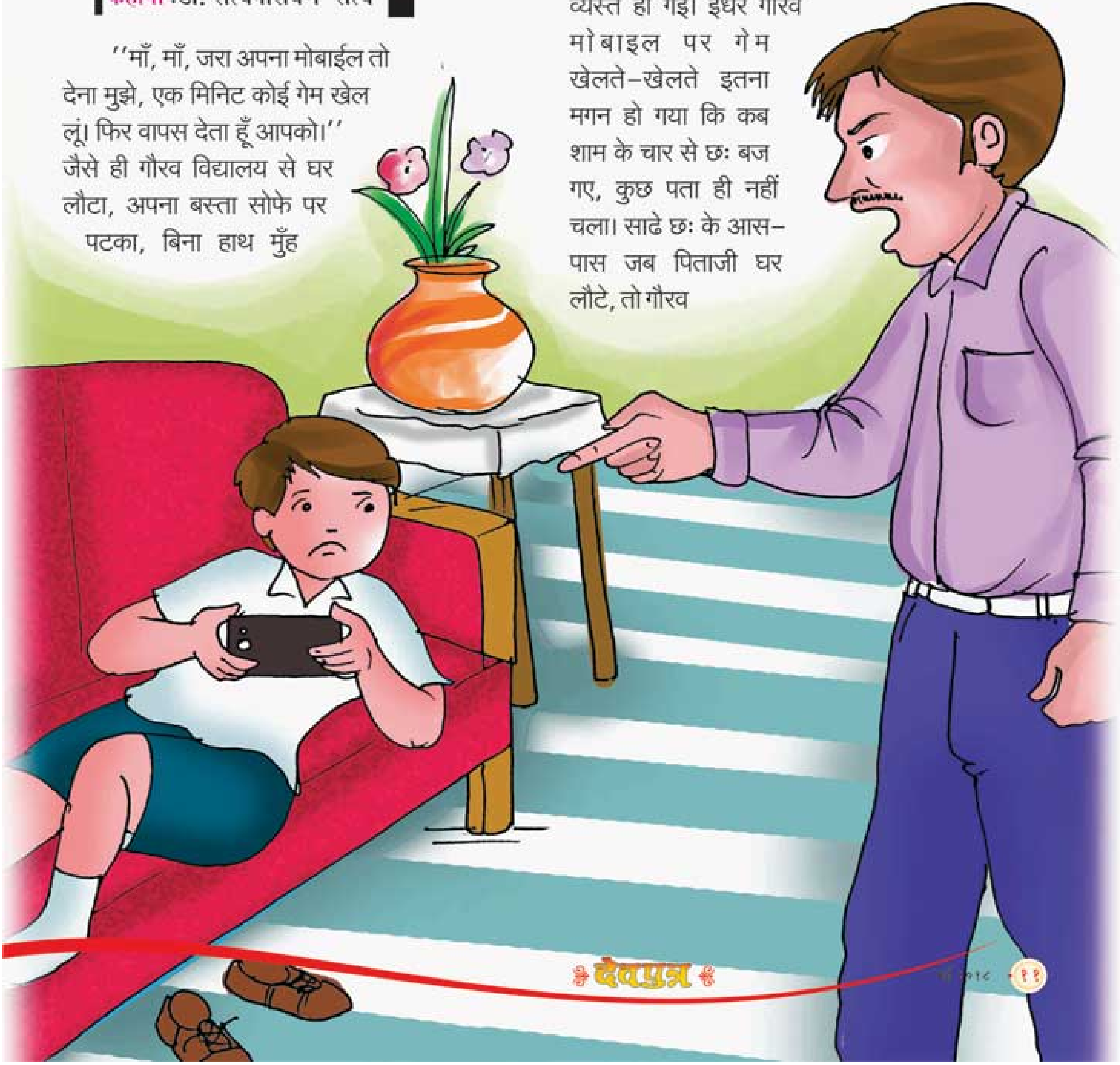

को विद्यालय की गणवेश में सोफे पर टाँगें फैलाए मोबाइल गेम देखते हुए पाया तो आग बबूला हो गए। यह क्या तमाशा बना रखा है? चार बजे से आए हुए हैं, साहब और अभी तक विद्यालय की गणवेश भी नहीं खोल पाए, चलो उठो, और बंद करो, यह मोबाइल देखना।' जब पिताजी ने गौरव को डाँट पिलाते हुए कहा तो माँ भी रसोई से दौड़ी–दौड़ी आई और बोली क्या करूँ एक मिनिट के लिए मोबाईल मांगा और यह हालत है तुम्हारी।''

तब गौरव माफी मागते हुए बोला झटपट हाथ मुँह धोने निकल गया। रात के खाने में जब पिताजी माँ व गौरव साथ बैठे तो फिर मोबाइल का जिक्र चला, गौरव के पिताजी समझाने लगे– ''गौरव, मोबाइल का शौक कम से कम रखा करो, अभी तुम छोटे हो पढने–लिखने में ध्यान दिया करो।''

''जी पिताजी'' कह कर गौरव ने पिताजी की बात की हाँ में हाँ मिला दी। अगले दिन से विद्यालय में वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो रही थी, गौरव और उसके सभी दोस्त परीक्षाओं की तैयार में जुट गए। उन्हें पता था कि परीक्षाएँ की तैयारी में जुट गए। उन्हें पता था कि परीक्षाएं सही ढंग से सम्पन्न हो गई और परीक्षा परिणाम अनुकूल हो गया तो सारी मेहनत रंग ले आएगी। फिर भी कभी–कभी उसका मोबाइल प्रेम भी जाग जाता। और पिताजी से आँख चुराकर वह मोबाइल पर गेम खेलने लगा ही जाता। विद्यालय का वार्षिकोत्सव आ रहा था, संस्था प्रधान जी ने सभी बच्चों के लिए अलग अलग प्रतियोगिताएं और कार्यक्रम निर्धारित कर दिए थे, एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी रखने का निर्णय हुआ। जिसका विषय था 'मोबाइल फोन और आज का बालक एक दूजे के प्रेरक–पूरक'

गौरव और उसके साथियों को यह थीम खूब पसंद आई उसने मोबाइल फोन के उपयोग के बिना आज की नई पीढ़ी को बिलकुल ही अनजान व अजनबी मान रखा था, इसलिए उसने विद्यालय के वार्षिक उत्सव में इस प्रतियोगिता के पक्ष में बोलने का निर्णय किया। शाम के समय में एक बार फिर अपने पिताजी से उसने विचार विमर्श किया– ''पिताजी, क्या आज के बालक या नई पीढ़ी की कल्पना, बिना मोबाइल फोन के की जा सकती है, मेरे विचार से तो बिल्कुल भी नहीं, आपका क्या विचार है?''

''बिल्कुल बेटे, तुम भी मोबाइल फोन के खूब शौकीन हो। इसलिए तुमको भी इसके बिना सब कुछ असंभव लग रहा होगा, पर बेटे, मेरे विचार से बालकों के लिए तो मोबाइल एकदम नाकारा, बेकार और अनुपयोगी उपकरण है, मेरे विचार तुम्हारे विचारों से एकदम उल्टे और अलग है।''

''हें, यह तो बड़े आश्चर्य की बात है।'' मुझे समझ नहीं आया, ऐसा आप कैसे कह सकते हैं, मुझे तो कोई गेम खेलना हो तो मोबाइल फोन, कोई जानकारी जुटानी हो तो फोन और कोई बातचीत भी करनी हो तो, यह मेरे खूब काम आ जाता है, इसलिए मैं

तो इसे नवीन पीढ़ी के सभी बाल–गोपालों के लिए अनिवार्यता मानता हूँ।'' गौरव ने जब अपनी बात रखी तो पिताजी को लगा कि इसके मन में बैठी हुई बातों को पुनः समझना ही पड़ेगा, सुधारना ही पड़ेगा।

धीमे–धीमे वार्षिक उत्सव की दिनांक भी नजदीक आने लगी, और गौरव अपने इस कार्यक्रम में बोलने के लिए सामग्री जुटाने लगा। पिताजी ने कहा–''बेटे, गेम खेलने से शारीरिक और मानसिक विकास दोनों होते हैं, जब हम कबड्डी, खो–खो, बॉलीबॉल, फुटबाल जैसे खेल खेलते है तो वहाँ दौड़भाग, शरीर की मेहनत और बुद्धि कौशल सभी का विकास होता है। शरीर से पसीना बहता है, हाथ–पैर और माँसपेशियाँ मजबूत होती है, श्वसन, पाचन, परिसंचरण, तंत्रिका और अस्थि तंत्र सभी का समग्र विकास होता है, इसके बदले, जब तुम मोबाइल लेकर उस पर गेम खेलने बैठते हो तो अकेले अकेले, आँखें गड़ाए स्क्रीन पर उलझे रहते हो, इससे शरीर के कौन से अंग का विकास होता है, उल्टा

मैंने तो कई–कई ऐसे बच्चों को भी देखा है, जो अधिक मोबाइल फोन चलाने से अपनी आँखें खराब कर चुके हैं, और बचपन में ही अपनी आँखों पर मोटा चश्मा चढ़ाए रहते हैं।''

''बात तो आप ठीक कह रहे है, पर पिताजी हमारे विज्ञान वाले आचार्य जी कहते हैं कि मोबाइल फोन से हम बहुत सारी जानकारी परक बातें भी सीख लेते है। विज्ञान व कई कई विषयों की जानकारी, यू ट्यूब व गूगल गुरु के माध्यम से मोबाइल फोन द्वारा बड़ी आसानी से समझी जा सकती है, क्या यह ठीक नहीं है'' गौरव ने अपनी शंका प्रकट करते हुए कहा।

''बेटे, विकल्प कभी श्रेष्ठ नहीं हो सकता, पाठ्यपुस्तक या गुरु का विकल्प कोई भी, कभी भी नहीं हो सकता है। कठिन व जटिल समस्याएं भले ही हम मोबाइल फोन से त्वरित हल कर सकते हैं, पर विद्यालयों, गुरुओं और पाठ्यपुस्तकों का अपना अलग ही महत्व होता है, इसका कभी कोई विकल्प नहीं बन सकता है। कभी कभी मुसीबत में या कोई जटिलता सुलझाने के लिए भले ही ऐसी तकनीकों का प्रयोग कर लिया जाए, पर संवेदनशीलता, तार्किकता, सामाजिकता और बहुमुखी गुणों का उपयोग या समझ मोबाइल, टीवी या कम्प्यूटर नहीं ला सकते हैं। डॉटा या शाबासी गुरु व माता–पिता ही दे सकते हैं, मोबाइल फोन नहीं, इस लिए मेरे विचार से मोबाइल फोन का प्रयोग बालकों के लिए तो पूर्णतया रोका जाना चाहिए या फिर सीमित उपयोग हो। अब तो बेटे, कई–कई आफिस में हम बड़े लोगों को भी मोबाइल फोन का प्रतिबंधित उपयोग करवाया जाता है।''

उसको भी लग रहा था, सच में मोबाइल फोन के आते ही, उसकी भी जिंदगी एक दम से बदलती गई। पहले गणित के बड़े–बड़े प्रश्नों को वह मौखिक ही मिनटों में हल कर दिया करता था। जब से उसने मोबाइल में केलक्यूलेटर चला कर प्रश्न हल करने शुरु किये हैं,

उसका समय तो बचता जा रहा था, पर गणितीय पकड़ कम होती जा रही थी। यही नहीं, पहले कैसे हम दोस्त, विद्यालय से आते ही गली के पास ही एक खाली बाड़े में खेलने चले जाते थे जिससे सब मिलजुल कर आनन्द करते, अब पागलों की तरह, स्क्रीन पर आँखें फाड़े, नजरें गड़ाए, गेम खेलते रहते हैं, सभी दोस्त अपने अपने कमरों में दुबके हुए, न मिलना, ना ही एक दूजे की कोई बात, सच में इस मोबाइल ने हमारी दोस्ती को ही अलग रूप में लाकर रख दिया है।

तभी वह बोल उठा– ''बस बस पिताजी, बस, अब मेरे समझ में आ गया है, मोबाइल को जितना उपयोगी हम समझ रहे हैं, सच में उतना है नहीं, हम दोस्तों का तो सारा मिलना जुलना ही इस फोन के डिब्बे ने बिगाड़ कर रख दिया है। जब मैं तो अपने वार्षिक उत्सव में ''मोबाइल फोन, बालकों के लिए पूरक'' विषय पर विपक्ष में बोलता हुआ साबित कर दूंगा, कि इसक अनुचित अत्याधिक, बौद्धिकता तो खत्म कर ही रहा है, इससे हमारी आखें खराब हो रही है, खेलने की क्षमता खत्म होने से हम शारीरिक व मानसिक रूप से भी कमजोर हो रहे हैं। बस, आज से फोन पर अनावश्यक टाईम पास बंद और सच में पढना, लिखना, खेलना–कूदना चालू।''

''शाबास बेटे, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। विज्ञान आधुनिक युग के कारण मोबाइल फोन को बिल्कुल ही नकारा नहीं जा सकता है, हो सकता है, अभिभावकों बड़ों व गुरुजनों के लिए यह उपयोगी व अनिवार्य हो पर बच्चों को इस यंत्र से बचाने में ही सार है।'' पिताजी ने भी इनकी हाँ में हाँ मिलाई। वार्षिक उत्सव में उसके विचारों से सब खूब प्रभावित हुए, तालियाँ तो बजी ही, पुरस्कार भी खूब आए।

अब गौरव व उसके दोस्त गेम तो खूब खेलते थे, पर मोबाइल पर नहीं, खेल के मैदान पर, सभी इन बच्चों के बदले–बदले व्यवहार पर खुश थे।

• भीलवाड़ा (राज.)

बचपन नाचे

कविता: डॉ. रामनिवास मानव

बहो कि जैसे बहती धारा।
मगर न टूटे कभी किनारा।।
बढ़ते जाओ, कहता पानी।
दुनिया सारी आनी–जानी।।
हरदम पक्षी बनकर चहको।
फूलों सा मुस्काओ, महको।।
हो साकार सभी का सपना।
इन्द्रधनुष हो जीवन अपना।।
तितली बनकर बचपन नाचे।
और तोतली कविता बांचे।।
वैर–भाव सब पीछे छूटें।
सदा प्रेम के अंकुर फूटें।।

• नारनौल (हरि.)

मनोरंजक चित्र पहेलियाँ

• चांद मो. घोसी

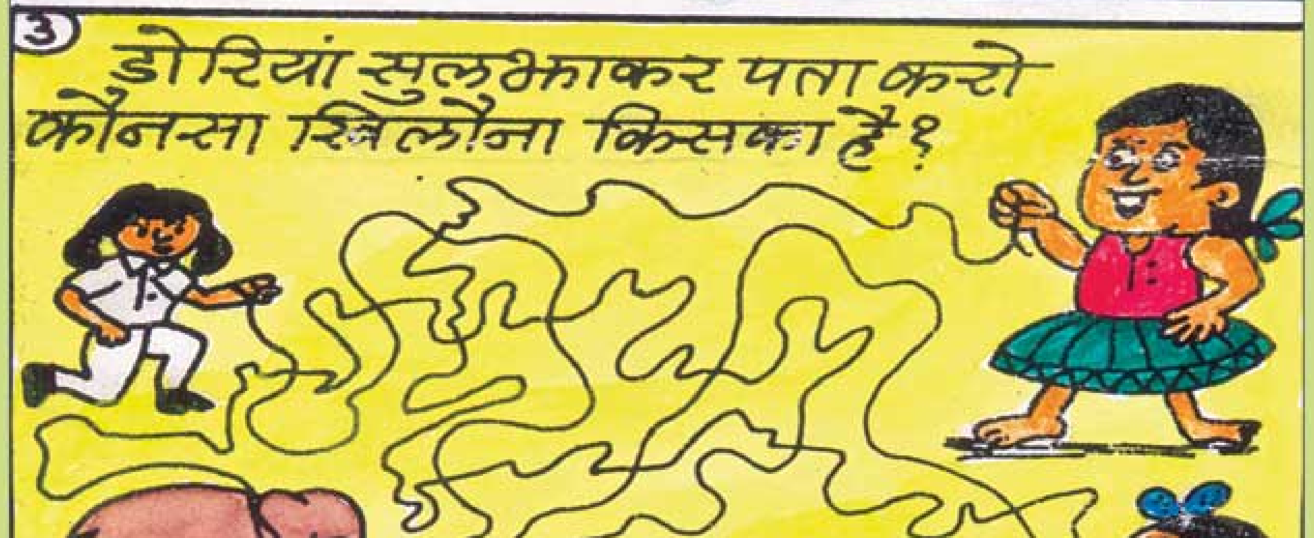

(उत्तर इसी अंक में)

बद अच्छा बदनाम बुरा

कविता : गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

तोतापरी, दशहरी, लँगड़ा, हापुस, नीलम लालमुँहाँ।
केशर, देशी, खट्टा, चौसा, कलमी क्या बादाम यहाँ।।
एक टोकरी में आ बैठे शुरु हो गयी आम सभा।
भाषण होने लगे दनादन दिखा दिखा कर स्वयं प्रभा।।
हापुस बोला फल मण्डी के हम राजा पर नाम बुरा।
हम सब 'खास म खास' किन्तु क्यों नाम हमारा 'आम' बुरा।।
बोल उठा बादाम नाम का पाया है अंजाम बुरा।
काजू किशमिश के संग रहता एक और बादाम बुरा।।
आमों के राज लँगड़े की शुभ काया पर, नाम बुरा।
उसको सब लँगड़ा कहते हैं बद अच्छा, बदनाम बुरा।।
केसर, देशी, खट्टा-मीठा सुनते सुनते ऊब गए।
नीलम, कलमी, लाल मुँहें सब खुसुर पुसुर में डूब गए।।
तब बम्बइयाँ संचालक ने सभाध्यक्ष को याद किया।
चौसे ने रस बरसा करदी सराबोर पाण्डाल किया।।
रस की रानी हरी दशहरी ने सबका सत्कार किया।
तोता परी मंच पर आया, आमों का आभार किया।।

• इन्दौर (म.प्र.)

बाल साहित्यश्री सम्मान से सम्मानित हुए डॉ. राकेश चक्र

मुरादाबाद। हिन्दी पद्य और गद्य में अपनी रचनाओं से जनमानस में अमिट छाप छोड़ने वाले साहित्यकार डॉ. राकेश चक्र को बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. राकेश चक्र को यह सम्मान दिल्ली पब्लिक लाइबेरी बोर्ड, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से दिया गया। उन्हें यह सम्मान संस्कृति मंत्री विजय गोयल के हाथों प्रदान किया गया। कान्स्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली में हुए सम्मान समारोह में डॉ. राकेश चक्र को डेढ़ लाख रुपए की धनराशि, सम्मान पत्र एवं पुस्तक भेंट की गई।

इस अवसर पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष डॉ० श्रीरामशरणा गौड़, उ.प्र. हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष डॉ० सदानन्द गुप्त और अनेक वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित रहे।

नाना के गांव जाना

कविता : पद्मा चौगाँवकर

नानाजी के गांव है जाना
गांव खेत की सैर करेंगे,
शुद्ध हवा सांसों में भरकर,
छुप्पा-छुप्पी खेल करेंगे
नये नये हैं दोस्त बनाना
छुट्टी में करने हंगामा,
नानाजी के गांव है जाना

ताल में तैरेंगे जी-भर कर,
खट्टे मीठे बेर चखेंगे,
आम तले फिर गोट[1] करेंगे
गुड़-महेरी और अथाना[2]
नानाजी के गांव है जाना।

मामा लायेंगे खरबूजे,
ककड़ी आम और तरबूजे
मामी सेंक सेंक कर देगी
कमल गट्टे के बीज मखाना
मुश्किल है वह स्वाद भुलाना।
नानाजी के गांव है जाना

घेर के नानी को बैठेंगे,
रोज कहानी सुना करेंगे
नानाजी से करें निहोरे,
बीते कल की बात बताना,
कैसा था वह वक्त पुराना
नानाजी के गांव है जाना।

● गंजबासौदा (म.प्र.)

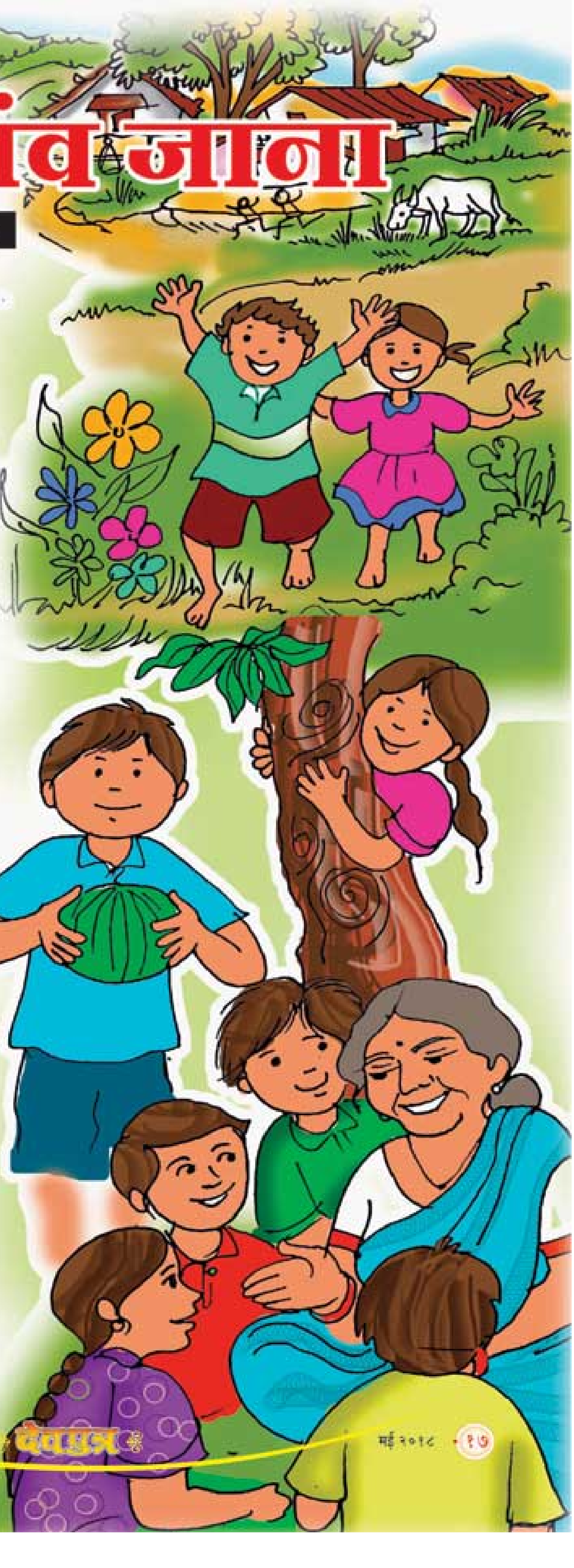

*१. पिकनिक २. अचार

सिंह पिंजरे में

१२ मई १६६६। आगरा आनंद में झुम रहा था। एक तो उस दिन औरंगजेब का जन्मदिवस था, दूसरे शिवाजी राजा औरंगजेब से मिलने आगरा आ गये थे।

शिवाजी आगरा क्या आये, अनेक आशंकाएं उठ खड़ी हुई। किसी ने कहा वे मिर्जा राजा जयसिंह से डर गए, आत्मसमर्पण कर दिया, हिन्दवी स्वराज्य के सपने को साकार होने के पूर्व ही खण्डित कर दिया। तो कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने अपना यह निश्चित मत प्रकट कर दिया कि अब औरंगजेब की पकड़ से निकल कर जा पाना असंभव है। अब वह सारे भारत को मुगलशाही के झंडे के नीचे विधर्मी बना कर रखेगा। आगरा प्रस्थान करने से पूर्व जब ४ मार्च १६६६ को शिवाजी माताजी के चरण छूने गए तो माता जीजाबाई भी चिन्तित थी, बोलीं –''शिवबा। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा है। अशुभ आशंकायें मुझे घेरे हुए है– रात में बुरे–बुरे स्वप्न आते हैं। आगरा जाना खतरे से खाली नहीं है। औरंगजेब अत्यंत ही क्रूर और कुख्यात धोखेबाज है, बेटा। फिर भी तू जानबूझ कर उसकी मांद में घुसा जा रहा है।''

''माँ! तू कितनी भोली है,'' शिवाजी बोले– ''बिना खतरा उठाये बड़े कामों में सफलता नहीं मिलती। आप माँ हैं –चिन्तित होगा आपका सहज स्वभाव है फिर भी अपने शिवबा को इतना असहाय न समझ– यहाँ माँ तू और माँ भवानी मेरे साथ हैं। स्थिति ऐसी है कि मुझे यह संकट झेलना ही पड़ेगा।''

''क्यों? क्या बिना आगरा गये, इन स्थिति का निदान नहीं हो सकता?''

''हाँ माँ। नहीं हो सकता। जानती हो शिवाजी के मिर्जा

राजा जयसिंह के सामने समर्पण कर देने का क्या परिणाम हुआ?''

''क्या परिणाम हुआ है?''

''यही कि जिन किलों एवं अपना इलाकों को खून देकर सेना और प्रजा ने जीता था, उन्हें मैंने औरंगजेब को वापस कर दिया है। इसके कारण प्रजा का मनोबल टूट गया है– उसका विश्वास उठा गया है। शिवाजी के कृतित्व पर अब उसका भरोसा न रहना स्वाभाविक है। आशायें मिट गयीं तो कोई विशेष बात नहीं वे फिर जगाई जा सकती हैं लेकिन माँ यदि भावना खण्डित हो गई तो प्रजा प्राणहीन हो जाएगी और फिर एक क्या सैकड़ों शिवाजी जन्म लें उसमें आत्मविश्वास जाग्रत नहीं कर सकेंगे। स्वराज्य एक ऐसा सपना ही रह जाएगा जिसके पूरे होने के पहले ही आंख खुल जाती है। मेरे आगरा जाने में स्वराज्य को बल मिलेगा– मुझे उत्तर और दक्षिण को जानने पहचानने का मौका मिलेगा, साथ ही प्रत्यक्ष जाकर औरंगजेब की कुटिलता और उसकी व्यवस्था का निरीक्षण करके भावी योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर सकूंगा। माँ, औरंगजेब के दरबार में हिन्दू सरदारों का एक बहत अच्छा समूह है। क्योंकि हमें तो आखिर लड़ना उन्हीं से पड़ता है। वहां जाने के बाद ही यह पता चल सकेगा कि मुगलों के बाजुओं में कितना बल हैं।''

''लेकिन बेटा , यह काम कोई और व्यक्ति किसी और ढंग से भी तो कर सकता है। तुम्हारे पास बहुत से चतुर, बहादुर तथा नीतिज्ञ लोग है।''

''नहीं माँ कभी–कभी ऐसा भी अवसर आता है जब सहायकों को नहीं स्वयं को आग में झोंकना पड़ता है। यह सच है कि हमारे पास वीरों, नीतिज्ञों और कुशल खिलाड़ियां की कमी नहीं हैं लेकिन उन्हें यह भी तो पता होना चाहिए कि उनका मुखिया उनसे भी बहादुर, साहसी, चतुर कुशल तथा नीतिज्ञ है। स्वराज्याकाश पर विपत्ति के बादल घनीभूत हैं। मिर्जा राजा को हम वचन दे चुके हैं। उनका विश्वास हमारे साथ है। उन्हें नाराज न करके इस समय उनकी खुशी से लाभ उठाने की आवश्यकता है।''

''जैसा उचित समझो बेटा! वैसा करो। तुम स्वराज्य के लिए समर्पित हो, यह ठीक है, लेकिन ''माँ'' का हृदय नहीं मानता। मैं तो यही चाहती हूँ कि तू आगरा न जाय किन्तु स्वराज्य हित की बात है तो जरूर जा। मैं अपने मन को धीरे–धीरे समझा लूंगी। अभी तो वह आशंकाग्रस्त है, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है।''

''माँ! आशंका त्याग कर अपना आशीष दें, तेरे शिवा का जीवन दीप बुझा पाने की क्षमता अभी तक मुगल झंझावात में उत्पन्न नहीं हो पाई है।''

माँ ने आशीष दिया। शिवाजी माता की चरणरज मस्तक, पर धारण कर राजगढ़ से आगरा के लिए निकल पड़े। वह दिन था ५ मार्च, १६६६ ई.।

जंगल की आग की तरह यह समाचार संपूर्ण उत्तर भारत में फैल गया कि शिवाजी औरंगजेब से मिलने अपने पुत्र बालराजे

शम्भाजी के साथ आगरा जा रहे हैं। चारों और एक ही सवाल गजब हो गया। औरंगजेब से मिलने शिवाजी जा रहे हैं। साथ में न सेना, न शस्त्र भगवान रक्षा करें। जिस रास्ते से होकर शिवाजी निकलते उसके दोनों और हजारों लाखों लोग उनके दर्शनार्थ पहले से खड़े मिलते। सारा उत्तर भारत आन्दोलित हो उठा था।

दो महीने की लम्बी यात्रा पूर्ण कर शिवाजी ११ मई, १६६६ को आगरा पहुंच गये। सोचा था कि मिर्जा राजा जयसिंह के आश्वासन के अनुसार उनका पुत्र रामसिंह उनकी अगवानी करके सम्मानपूर्वक आतिथ्य करेगा किन्तु रामसिंह ने स्वयं न आकर अपना एक कर्मचारी भेजकर जो काम स्वयं का था, उसे उससे करायावा मन ग्लानि से भर उठा। लक्षण अच्छे नहीं दिख रहे थे।

दिन बीत गया। सांयकाल शिवाजी अपने पुत्र शम्भाजी के साथ आगरा घूमने निकले। बादशाह के जन्मदिवस की चहल पहल भरपूर थी। भीड़भाड़ पूर्ण बाजारों से होकर वे यमुना तट की ओर निकल गए। आगरे के सजावट की प्रतिच्छाया यमुना जल पर प्रत्यक्ष उभर आई थी। तट पर टहलते शिवाजी न जाने किन विचारों में डूब गए। मुट्ठियां बंध गयी। होठ भिंच गए और अनजाने ही बोल उठे– **''हाँ, मैं पुनः प्रतिज्ञा करता हूँ कि स्वराज्य की स्थापना के लिए मैं आजन्म जूझता रहूंगा। लक्ष्य प्राप्त किए बिना विश्राम नहीं लूंगा। जय भवानी।''**

१२ मई, १६६६। आगरा के किले में औरंगजेब का दरबार लगा था। छोटे–बड़े सभी सरदार, प्रतिष्ठित प्रजाजन सभी किले की ओर बढ़े चले जा रहे थे। शिवाजी भी तैयार होकर रामसिंह के आने की प्रतिक्षा कर रहे थे। किन्तु रामसिंह उस दिन भी नहीं आया। जो आया वह था उनका

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) पवन-पुत्र हनुमान को उनकी शक्तियों की याद किसने दिलाई?

(२) भारत के युद्ध में दो ही जाने-माने योद्धा ऐसे थे जो न कौरवों की ओर से लड़े और न पाण्डवों की ओर से। एक बलराम थे और दूसरा कौन था?

(३) ताइवान का प्राचीन नाम क्या था?

(४) भारत का कौन सा नगर दुनिया का सबसे प्राचीन नगर माना जाता है?

(५) वेद व्यास की लिखी महाभारत में कितने पर्व और कितने श्लोक हैं?

(६) शक्तिशाली मगध साम्राज्य की राजधानी मौर्य काल में कौन सी नगरी थी?

(७) 'तहकिकमा-लिल-हिन्द' नाम के ग्रंथ में किस अरबी विद्वान ने प्राचीन भारतीय विज्ञान और गणित की प्रशंसा की है?

(८) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के वे महानायक कौन थे, जिनकी युद्ध कला से अंग्रेजों के छक्के छूट गये। वे कभी पकड़े भी नहीं गये?

(९) बप्पा रावल के बाद अरब के खलीफा को मात देने वाले मेवाड़ के रावल कौन थे?

(१०) किस भारतीय गणितज्ञ पर बनी फिल्म 'द मेन हू न्यू इन्फिनिटी' गत २९ अप्रेल २०१६ को पूरे भारत में प्रदर्शित की गई?

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

मुंशी। बोला– ''महाराज, चलें। मैं आपको लेने आया हूं।''

शिवाजी अन्दर ही अन्दर जलभुन गये। किन्तु क्रोध करने का यह अवसर नहीं था। वे उसे और शम्भा जी को अपने साथ लेकर घोड़े पर बैठ किले की ओर चल पड़े। उन्हें आने में हो रहे विलम्ब के कारण परेशान होकर रामसिंह बाहर निकले तो रास्ते में शिवाजी मिल गए। अभिवादन के पश्चात् आगे–आगे रामसिंह और पीछे–पीछे शिवाजी किले के अन्दर पहुंचे तो तब तक दीवान–ए–खास का कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। रामसिंह वहां टिके नहीं। वे शिवाजी को लेकर अन्तरंग दरबार में जा पहुंचे। दरबारी हाथ बांधे खड़े थे, औरंगजेब अपने सिंहासन पर आरूढ़ था। उसने हीरे मोती के मूल्यवान जड़ाऊ वस्त्र धारण कर रखे थे। शिवाजी को देखते ही वह खूंखार–सा होकर घूरने लगा। उसे सामने देखकर शिवाजी का सीना सहज रूप से तन गया, मस्तक ऊंचा हो उठा, भृकुटि खिंच गई।

शिवाजी बेधड़क औरंगजेब की ओर बढ़े जा रहे थे। आगे बढ़कर उन्होंने अपना उपहार बादशाह को भेंट किया।

''हूजूर'' –बख्शी आसदखान बोला– ''ये हैं मराठा सरदार शिवाजी और साथ में है उसका फर्जन्द (बेटा) शम्भा जी।

औरंगजेब ने इस परिचय पर जैसे कोई ध्यान ही नहीं दिया। बात पहले से सधी–बंधी थी। शिवाजी को पिछली पंक्ति में ले जाकर पंचहजारियों के बीच खड़ा कर दिया गया और फिर एक–एक करके सभी सरदारों को पोशाक भेंट की गई। शिवाजी का क्रम आया तो पोशाक बांटने वाला उन्हें छोड़कर आगे बढ़ गया, जबकि उनके सामने खड़े जसवन्त सिंह राठौर को पोशाक देकर सम्मानित किया गया।

अचानक सिंह की दहाड़ हुई– ''रामसिंह! यह क्या हो रहा है?'' और सारा दरबार भय से कांप उठा। शिवाजी बोले– ''क्या मुझे अपमानित करने के लिए ही इतनी दूर से यहां बुलाया गया है। क्या हमारा स्थान जसवंत सिंह से भी नीचा है। मिर्जा राजा को मुझे पहले ही बता देना चाहिए था कि मेरा भरे दरबार में अपमान किया जाएगा।''

दरबारी भय से कांपने लगे। शिवाजी के कौशल से सभी परिचित थे। वे उनके नाम से डरते थे, आज तो वह प्रत्यक्ष खड़े थे।

रामसिंह अपने स्थान से उठकर दौड़े। हाथ जोड़कर शिवाजी के सामने गिड़गिड़ाने लगे– ''महाराज! शांत हो जाइए, सब ठीक हो जाएगा।

परन्तु शिवाजी के क्रोध का ज्वालामुखी फूट चुका था। उन्होंने और भी ऊंचे स्वर में कहा कि– ''आपको, आपके पिताजी और आपके बादशाह सलामत को भी मालूम है कि हम कौन है। हमें अपनी मनसबदारी नहीं चाहिए और न हम आपकी दया के भिखारी ही हैं। हम आपसे अपने योग्य व्यवहार की आशा करते थे। ये हमारी तौहीन है।'' कहते हुए शिवाजी पीठ फेर कर दरबार से बाहर जाने लगे।

''अनर्थ घोर अनर्थ।'' कहते हुए रामसिंह पुनः दौड़े। रास्ता रोक कर खड़े हो गए बोले– महाराज, ऐसा न करें। इस प्रकार सिंहासन की ओर पीठ करके दरबार से जाना बादशाह का अपमान करना है। इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।''

इधर रामसिंह शिवाजी की चिरौरी कर रहे थे और उधर औरंगजेब के दरबारी तलवारों की मूठ पर हाथ रखकर बादशाह के इशारे का इंतजार।

लेकिन शिवाजी नहीं माने तो नहीं ही माने। शिवाजी को दरबार में पुनः लाकर खिताब देने की औरंगजेब ने आज्ञा दी तो वे क्रोध में उबल पड़े– ''मुझे खिताब नहीं चाहिए। मैं आज से आपकी मनसबदारी का भी त्याग करता हूं। अब मैं पूर्ण रूप से स्वतंत्र हूं। मैं ऐसे बादशाह के सामने जाना कदापि पसंद नहीं करता, जिसे किसी की इज्जत करने की भी तमीज नहीं है।''

शिवाजी आगे बढ़ गये। रामसिंह पीछे–पीछे चला। अपने घर ले जाकर घंटों अनुनय–विनय करता रहा किन्तु शिवाजी पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे थोड़ी देर वहां ठहरने के बाद अपने स्थान पर चले गए। वहां की निगरानी कड़ी कर दी गई। आगरा शिवाजी की निडरता की चर्चा से गरम हो उठा। शिवाजी के आने–जाने पर रोक लग गई। अब वे औरंगजेब के बन्दी थे।

(निरंतर अगले अंक में)

पुलों की कहानी

कहानी : डॉ. बानो सरताज

पुल एक ऐसी इमारत अथवा निर्माण है जो यातायात में रुकावट बनने वाली किसी चीज जैसे नदी, समुद्र, घाटी, पहाड़ आदि को पार करने के लिए बनाई जाती है।

उद्देश्य –

पुल निर्माण के मुख्य तीन उद्देश्य हैं –

(१) बिना किसी रुकावट के यात्रा करना।

(२) यातायात प्रबंध सुगम बनाना।

(३) वन्य पशुओं की रक्षा करना।

प्रकार :

पुलों के ३ प्रकारों में विभाजित किया जाता है–

पुल –

(१) मटेरियल के आधार पर

(२) बनावट के आधार पर

(३) क्षमता के आधार पर

(१) पुल निर्माण में जो मटेरियल उपयोग में लाया जाता है, उस आधार पर पुल तीन प्रकार के होते है।

(१) लट्ठों का पुल (Fallen log across)

(२) गुच्छा पुल (Truss Bridge)

(३) शहतीरों पर टिका पुल (Berm or girder bridge)

● पुराने जमाने में एक गांव से दूसरे गांव जाने, बाजार हाट जाने में बाधा बनने वाले नदी नालों, झरनों पर वृक्षों के बड़े–बड़े लट्ठे काट कर एक छोर से दूसरे छोर तक डाल दिए जाते थे। वो पुल पैदल चलने वालों के लिए होते थे। उन पर से गाड़ियां नहीं गुजर सकती थीं।

●दूसरे प्रकार के पुल घास, बेलों–जड़ों को गूंथ कर बनाए हुए गुच्छों से निर्मित होते थे। इन्हें गूंथने के लिए जो रस्सियाँ बनाई जातीं वो भी बेलों और घास की होती थीं। उन पुलों में भी वही कमी थी अर्थात केवल वो पैदल चलने वालों के लिए थे।

● शहतीरों पर टिके हुए पुल कल भी बनते थे, आज भी बनते हैं।

(२) बनावट के आधार पर भी पुल विभाजित किए जाते हैं।

(१) कैंचीदार पुल (Scissor Bridge)

(२) झूला घर (Suspenio Bridge)

(३) महराबदार पुल (Areh Bridge)

दोनों छोरों पर बड़ी कैंची के दोनों छोर खड़े करके मध्य में टेक (fulerum) के सहारे जोड़ देने के पश्चात् कैंची पुल तैयार होता है।

स्कॉट लैंड में फॉर्थ (Forth) नदी पर कैंची पुल बना हुआ है। क्यूबिक का सेंट लारेंस (Saint law rence) कैंची पुल १८०० फीट लंबा है। ऐसे पुल सदैव फौलाद के मोटे तारों या रस्सों को गूंथ कर बनाए जाते हैं।

● झूला पुल, पेड़ों की जड़ों टहनियों, बेलों आदि को रस्सी और तारों की सहायता से गूंथ कर झूले की भांति बनाए जाते हैं। मध्य में ये झूले हवा में झूलते रहते हैं।

६०० ई. पूर्व में चीन में झूला बनाए गए।

१७७० में इंगलैंड में जंजीरों के सहारे झूला पुल तैयार हुए।

१८०९ में अमरीका में मेरी मॉक (Marry Moc) नदी पर २४० मीटर लंबा झूला बनाया गया।

न्यूयार्क और न्यू जर्सी के बीच का झूला पुल, एक आश्चयर्जनक पुल है।

● मेहराबदार पुल लोहे की शहतीरों पर खड़े किए जाते हैं। ऊपर की ओर मेहराबें बनाई जाती हैं।

लोहे का सब से बड़ा मेहराबदार पुल कोम्बलेंजी (Comb lenzee) में राईन नदी पर बनाया गया है। प्रत्येक मेहराब की लंबाई ३१५ फीट है।

वर्तमान समय में आस्ट्रेलिया का सिडनी हार्बर पुल (sydney Harbour bridge) सब से बड़ा मेहराबदार पुल है।

(३) क्षमता के आधार पर तीन प्रकार के होते हैं।

एक मंजिला पुल (Single-Storeyed)

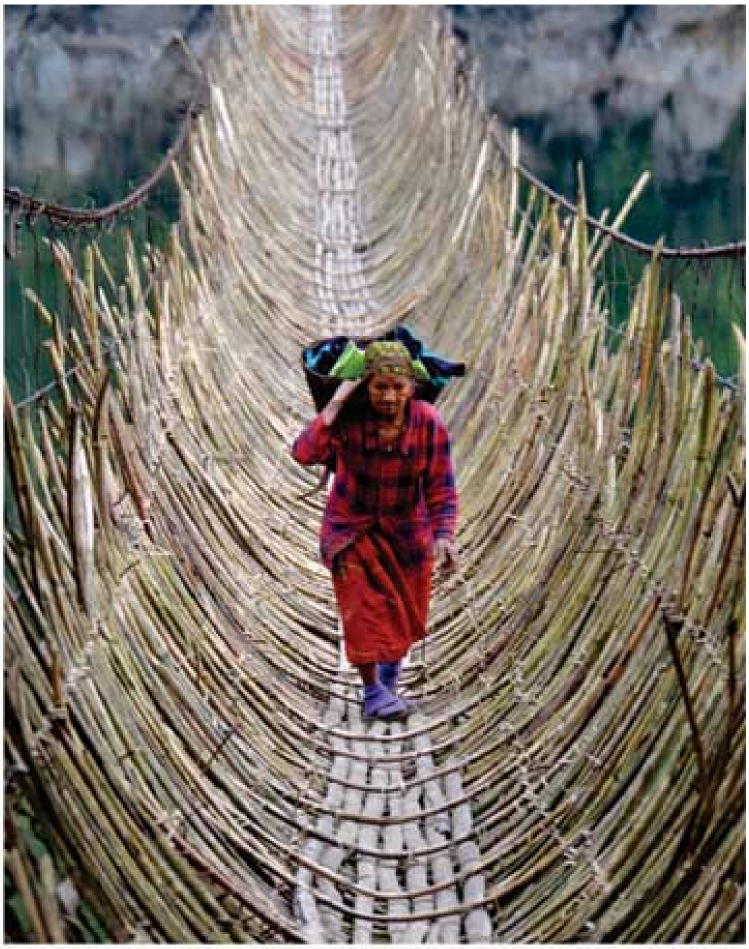

दो मंजिला पुल (Donble Storeyed Bridge)

बहते हुए पुल (Floating Storeyed Bridge)

● एक मंजिल पुल केवल एक प्रकार के ट्रेफिक के लिए होता है। रेल और सड़क के पुल अलग-अलग होते हैं।

● दो मंजिला पुल एक ही लाईन पर दो ट्रैक पर होता है। एक ट्रैक ऊपर वाला रेल मार्ग होता है, नीचे वाला सड़क और पैदल पुल होता है।

दिल्ली का जमुना नदी का पुल डबल मंजिला पुल है।

● पानी पर बहते हुए पुल वास्तव में वो नहरें होती हैं जो जहाजों और बड़ी नावों के लिए बनाई जाती है।

● चन्द्रपुर (महा.)

गर्मी आ गई

कहानी : बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

''बधाई हो बधाई हो बधाई हो, सभी को बधाई हो गर्मी की हमारी ओर से ढेर सारी बधाई हो।''

''अरे सुबह सुबह कौन बधाई देने आ गया।'' पंखा नींद में आँखें खोलते हुए पूछ पड़ा।

अरे ओ, पंखे हमें पहचाना नहीं मैं कूलर बोल रहा हूँ।'' तुम्हारा दोस्त।

''कूलर भाई तुम्हें कैसे पता चल गया कि गर्मी आ गई। अभी तो सर्दी पड़ रही है। तुमने मुझे नाहक नींद से जगा दिया।''

''हमें यह खबर सूरज की धूप आज आ कर दे गई। तुम देख नहीं रहे हो बाहर कितनी तेज धूप खिली है। हमें धूप ने बताया कि मैं आ भी हूँ तथा सर्दी दादी पहाड़ों के ऊपर चली गई है।''

''वाह! सर्दी दादी पहाड़ पर चली गई। तब तो सचमुच गर्मी आ गई। छः महिने से सोते सोते मैं तो ऊब गया हूं। अब तो हमारी सबको जरूरत पड़ेगी।'' पंखा बोल पड़ा।

''तुम्हारी भी पड़ेगी और हमारी भी पड़ेगी।'' कूलर बोल पड़ा। तभी घर के एक कोने खड़ी एसी बोल पड़ी।

''अरे ओ पंखे और कूलर भाई तुम दोनों आपस में क्या बातें कर रहे हो हमें भी बताओ ना।''

''बधाई हो बधाई हो, तुम्हें भी ए.सी. बहन बधाई हो। गर्मी आ गई। सर्दी पहाड़ पर चली गई। वाह, गर्मी आ गई मजा आ गया। मैं भी छः महिने से बैठी-बैठी उब गई थी। कोई मुझे पूछ भी नहीं रहा था। अब तो सबको हम सबकी जरूरत पड़ेगी। हमारी हर जगह इज्जत और सम्मान बढ़ेगा।'' तभी घर के एक कमरे में पड़ा फ्रीज सबके बीच आकर बोल पड़ा- ''गर्मी के आ जाने से हमारी खूब आवभगत होगी। हमारी भी इज्जत और सम्मान बढ़ जाएगी। हमारी मांग बढ़ेगी।''

इसी बात पर चलो हम सब गर्मी जिन्दाबाद का नारा लगाएं।

''फ्रिज बोल पड़ा मैं कहूंगा गर्मी, तो तुम कहना जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!''

''गर्मी! जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!! गर्मी! जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!! गर्मी! जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!''

जिन्दाबाद की आवाज सुनकर घर की मालकिन दौड़ी दौड़ी वहां आ पहुंची जहां पर कूलर, पंखा, ए.सी. और फ्रीज हाथ उठा उठा कर गर्मी जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे।

घर की मालकिन सबको डांट कर चुप कराती हुई बोली तुम सब ने बहुत लगा लिया गर्मी जिन्दाबाद का नारा। अब कोई गर्मी जिन्दाबाद का नारा नहीं लगाएगा। तुम सब अपनी अपनी जगह पर चले जाओ।

मैं तुम सब को चालू कर देती हूँ। ताकि तुम सब हमें गर्मी से राहत दे सको। इतना कहकर घर की मालकिन ने सबका बटन गिरा कर सबको चालू कर दिया।

पंखा कूलर फ्रीज ए.सी. चालू होते ही सभी खिल खिला कर हंस पड़े।

• गोरखपुर (उ.प्र.)

ग्रीष्म गीत

कविता : राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण'

राम-श्याम
सुबहो शाम
खाते रहते
मीठा आम।

बाल-पाल
गए चौपाल
नहीं मिला
तरबूजा लाल।

तू जा-तू जा
करती पूजा
खुद ले आई
झट खरबूजा।

रानी-बानी
दोऊ सयानी
देती सबको
ठण्डा पानी।

• उज्जैन (म.प्र.)

बड़े से छोटा

ठण्डा पानी अमृत जैसा, मिट्टी के है बने घड़े
कौन घड़ा है किससे छोटा, तनिक बताओ खड़े खड़े

(उत्तर इसी अंक में)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१०)

कथासत्र – ९

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। शंकर, मनोरमा और माधव समय पर आकर आम के वृक्ष के नीचे बैठ गए। ठीक समय पर दादाजी भी उपस्थित हुए। तीनों ने उठकर दादाजी को चरण स्पर्श कर राम राम कहा। दादाजी भी राम राम कहकर अपने आसन पर बैठ गए।

तीनों की तरफ गहरी दृष्टि से देखा और कहा– ''हरिदेव संस्कृत भाषा के विद्वान हो गये उस समय हरिदेव की उम्र उठारह वर्ष होने वाली थी। एक दिन सुबह अजनाभ ने अपनी जन्म पत्रिका निकाल कर देखा और हरिदेव गोविन्द सहित छः ब्रह्मचारियों को अपने पास बुलाकर कहा। देखो जन्म पत्रिका के अनुसार मेरी आयु समाप्त होने वाली है। तुल लोग तुरंत जाकर ब्राह्मणों को बुलाओ और कल घर में विष्णुसहस्रनाम पाठ करो। उनकी बात सुनते ही घर का वातावरण तुरंत अंधकार जैसा हुआ। उनकी पत्नी पारिजाती ने रोना–धोना कर दिया। दूसरे दिन ब्राह्मणों से विष्णु सहस्रनाम पाठ करवाया और ब्राह्मणों को भोजन करवाया। तीसरे दिन सुबह अजनाभ शौच–स्नानादि नित्यकर्म समाप्त कर मंदिर के सामने बैठ गए। शिष्यगण उनके पास बैठे। कुछ देर बाद उनके प्राण पखेरु उड़ गए। घर में हाहाकार मच गया। गांव के लोग आए। उनका नश्वर शरीर श्मशान में अग्निसंस्कार के लिए लाया गया। चंदन काष्ठ से चिता बनाई गई। पुत्र हरिदेव ने मुखाग्नि कर चिता का अग्नि संयोग कर दिया। अग्नि धधक कर जलने लगी। इतने में हरिदेव की माता पारिजाती दौड़कर आई और धधकती हुई चिता में कूद पड़ी। किसी को पता ही नहीं चला कि पति के साथ पत्नी भी सती हो गई।

मनोरमा – दादाजी ! सती होने की कथा हमने पुस्तक में पड़ी थी, क्या उस समय कामरूप में भी सती होने का नियम था?

दादाजी – हाँ बेटा, अन्यथा पारिजाती अपने पति अजनाथ की चिता पर कूद नहीं पड़ती? है न? उस काल के कवियों की रचनाओं में पर्याप्त भारत शब्द का उल्लेख और भारत की प्रशस्ति है। इस संदर्भ में आगे चर्चा करेंगे।

सब लोग किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। सबके सहयोग से श्राद्ध कर्मादि सम्पन्न हुआ। उस समय हरिदेव की विद्वता और भक्ति चारों तरफ प्रचारित हो गई थी। अनेक लोग उनके पास आकर शास्त्रादि का ज्ञान प्राप्त करने के साथ शरण भी ग्रहण करने लगे। गोविन्द उनके अभिभावक के रूप में देखभाल करते रहे। दिन अच्छी तरह आगे बढ़ने लगे, परन्तु किसी भी व्यक्ति को महान बनने के लिए अग्नि परीक्षा देना अनिवार्य हो जाता है। हरिदेव को भी देना पड़ी।

उस समय कामरूप के लोग शक्ति और शैव परम्परा के थे। देवी के सामने पशु–पक्षियों के साथ सैकड़ों मनुष्यों को भी बलि चढ़ाई जाती थी। उसके विरुद्ध आवाज उठाने वालों को सजा दी जाती थी। हरिदेव जिस राज्य में थे उस राज्य का राजा शत्रु से पीड़ित हो गया? राज पंडितों ने कहा– ''महाराज आपके राज्य में एक बालक शैव–शाक्त धर्म को नकार कर एक विष्णु भक्ति का प्रचार कर रहा है जिसके कारण आपके राज्य में अमंगल हो रहा है।'' राजा ने तुरंत हरिदेव को पकड़कर लाने के लिए सिपाही भेज दिए। सिपाही जाकर

हरिदेव को सम्मानपूर्वक राजा का आदेश सुनाया और उनके साथ तुरंत जाने के लिए तैयार होने को कहा। हरिदेव निरुपाय हो गया। हरिदेव अपनी भगिनी सुभद्रा के साथ तुरंत मंदिर में प्रवेश कर गए और इस दुर्घटना से बचने के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगे। बहुत समय तक दोनों के मंदिर से न निकल आने के कारण सिपाहियों ने आवाज लगाई परन्तु वहाँ से उत्तर नहीं आया। निरुपाय होकर सिपाहियों ने द्वार तोड़कर देखा कि मंदिर में कोई भी नहीं है। भगवान विष्णु का विग्रह भी गायब हो गया। वे वापस चले गए। गोविन्द रोने लगे। दोनों को खोजने के लिए निकले। वह ब्रह्मपुत्र के किनारे पर स्थित जंगल में प्रवेश कर खोजने लगे। थोड़ी ही दूर पर किसी बालिका की रोने की ध्वनि सुनी और उस तरफ देखने लगा। उसने देखा कि एक विशाल वट वृक्ष के नीचे हरिदेव बैठे हैं और पास में सुभद्रा रो रही थी। उसन देखा कि हरिदेव और सुभद्रा के साथ एक बहुत सुन्दर संन्यासी भी बैठे हैं। गोविन्द उनके पास पहुँचते ही संन्यासी अन्तर्धान हो गए। गोविन्द आश्चर्य चकित हो गए। उन्होंने सोचा कि जाको राखे साइयाँ उसका बाल कोई बाँका नहीं कर सकते हैं। वह हरिदेव के चरणों में प्रणाम किया और कहा– मैं आजीवन तुम्हारे साथ रहूँगा। रात को उनके साथ वहाँ बिताया। सुबह दौड़ कर घर आया और कुछ भोजन सामग्रियाँ लेकर फिर हरिदेव और सुभद्रा के पास उपस्थित हुआ। उस समय उनके पास अनेक लोग उपस्थित होकर रो रहे थे।

हरिदेव ने कहा– मैं और वापस घर नहीं जाऊँगा। आप लोग मेरे लिए एक भेल (भूर) अर्थात् केले के बड़े–बड़े पेड़ों से बनाया गया जलयान) बना दो, हम तीर्थ यात्रा के लिए निकल जाएँगे। लोगों ने अत्यंत दुःखित होकर एक बड़ा भेल बना दिया। गोविन्द के साथ हरिदेव और सुभद्रा भेल पर चढ़ गए और ब्रह्मपुत्र के विशाल जलस्रोत से पश्चिम की तरफ यात्रा प्रारंभ कर दी। दूसरे दिन दोपहर के समय प्राग्ज्योतिषपुर के ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तरफ अश्वक्रांत के जनार्दन तीर्थ में उपस्थित हुए। भेल वहाँ रोका और हरिदेव ने कहा– गोविन्द भैया यह बड़ा पावन क्षेत्र है, एक समय मेरे पितृदेव ने यहाँ गुरुकुल बनाकर रहे थे, उनके कई शिष्य यहाँ हैं। इतने में दो पंडे यहाँ उपस्थित हुए और उनका परिचय पूछा। परिचय पाने के बाद अत्यंत श्रद्धा के साथ मंदिर में जाने का आग्रह किया। तीनों ब्रह्मपुत्र के ब्रह्मकुण्ड में स्नानतर्पण आदि कर मंदिर में प्रार्थना की और भोजन कर विश्राम किया। दूसरे दिन सुबह ब्रह्मपुत्र में स्नान–तर्पणादि कर मंदिर गए। उनके साथ और कई लोग गए थे। सबसे पहले मंदिर का द्वार खोलकर हरिदेव ने प्रवेश किया। उनके प्रवेश करने के बाद ही तुरंत मंदिर का द्वार बन्द हो गया। मंदिर के द्वार खोलने का प्रयास किया गया पर संभव नहीं हुआ। वहाँ लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। सब लोग आश्चर्य होकर हरिनाम कीर्तन करने लगे। बहुत देर बाद मंदिर का द्वार खुल गया अपने आप। सबने देखा हरिदेव माला तिलकों से सुशोभित होकर प्रसन्न मुद्रा में आकर द्वार के पास खड़ा हो गया। बाहर प्रतीक्षा कर रहे भक्तों ने जब पूछा तो हरिदेव ने कहा– ''मंदिर में एक संन्यासी ने मुझे दीक्षा प्रदान की और ये माला तिलक उन्होंने ही मुझे दिया।'' सब लोग भाव–विभोर होकर उनको प्रणाम करने लगे।

वहाँ कई दिन रहे। अनेक लोग उनसे शरण भी लिए। लोग उनको वहाँ रहने के लिए बहुत आग्रह करने लगे, परन्तु हरिदेव ने कहा कि मैं तीर्थ यात्रा का संकल्प लेकर निकला हूँ इसलिए पहले तीर्थयात्रा सम्पन्न कर लूँ, उसके बाद जो होगा देखा जाएगा। सबसे बिदा लेकर भगिनी सुभद्रा और गोविन्द के साथ केले के भेले पर चढ़ गए और यात्रा शुरु की।

मनोरमा– दादाजी! कामरूप में भी उस समय महान संत हुए थे न? कितनी मजे की बात है। ऐसा लगता है कि सुनती ही रहूँ।

दादाजी – हाँ बेटा! बहुत मधुर कहानी है। आगे और बताऊँगा। आज समय हो गया। तुम्हारी पढ़ाई है। राम...राम...

सब – राम...राम...

• **ब्रह्मसत्र तैतेलिया, गुवाहाटी (असम)**

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

सिक्किम का राष्ट्रीय वृक्ष :

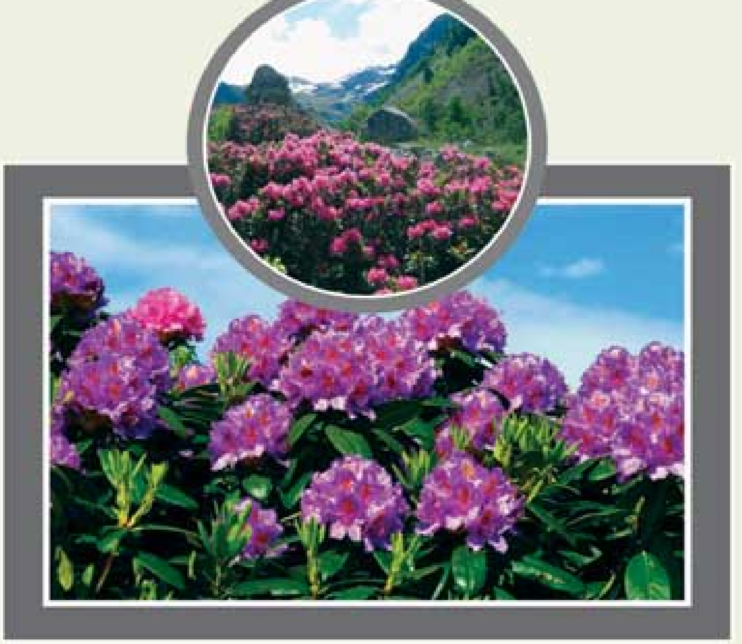

रोडोडेनड्रान

डॉ. परशुराम शुक्ल

हिम पर्वत पर मिलने वाला,
फूल बड़े मतवाले।
छोटी झाड़ी से पौधे तक,
इसके रूप निराले।।
छह हज़ार मीटर ऊँचाई,
तक यह पाया जाता।
धीमी गति से बढ़कर अपना,
सुन्दर रूप सजाता।।
मूल रूप से सिक्किम का है,
सर्दी सहने वाला।
मोटे डण्ठल चौड़ी पत्ती,
पौधा बड़ा निराला।।
आते ही गरमी का मौसम,
फूल अनोखे आते।
पहले होते ये घंटी से,
फिर गुलाब हो जाते।।
अंग सभी उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते।
रोग भयानक लगने वाले,
छू मंतर हो जाते।।

• भोपाल (म.प्र.)

परशुराम शुक्ल को राष्ट्रीय सम्मान

नई दिल्ली। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित पृथ्वी विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना २०१६ में भोपाल के वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल के विश्वकोश जलीय स्तनपायी कोश का द्वितीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया है। संजय प्रकाशन द्वारा इसका प्रकाशन वर्ष २०१५ में किया गया था।

उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व सन् २०१५ में श्री शुक्ल को उनकी पुस्तक भारत के राजकीय प्राकृतिक प्रतीक पर मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा एक लाख रूपए का राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार मिल चुका है।

मास्टर दीनानाथ

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

मास्टर दीनानाथ अब बहुत बूढ़े हो गए थे। उन्होंने अपना सारा जीवन विद्यालय में बच्चों को पढ़ाने-लिखाने में लगा दिया था। वे बड़ी मेहनत से बच्चों को पढ़ाते थे। उन्हें अनुशासनहीनता बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। जो भी बच्चा पढ़ाई से जी चुराता उसे वे कड़ी से कड़ी सजा देते। इसलिए पढ़ने वाले बच्चे उन्हें देखकर थर-थर काँपते थे।

अब तो उन्हें विद्यालय से सेवानिवृत्त हुए भी बहुत दिन हो चुके थे। उन्हें पेंशन मिला करती थी।

आज उन्हें बैंक जाना था। दिसम्बर का महीना समाप्त होने को था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। कई दिनों से धूप के दर्शन तक नहीं हुए थे। इतनी सर्दी में घर से बाहर निकलने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। पर क्या करते, उन्हें जाना तो था ही। उन्हें बैंक से रुपए निकालने थे। इस समय उन्हें रुपयों की सख्त जरूरत थी।

हिम्मत करके वे जैसे तैसे बैंक पहुँचे। बैंक से रूपए निकालने वालों की लंबी लाइन लगी हुई थी। इतनी लंबी लाइन देखकर तो उनके होश ही उड़ गए। वे सर्दी के मारे थर-थर काँप रहे थे। एक बार तो उन्होंने सोचा कि लौट चलें। पर फिर सोचा कि कल भी तो आखिरकार उन्हें ही आना पड़ेगा। आज ही उन्हें घर से निकलते बहुत देर हो गई थी। इसलिए तो यहाँ इतनी भीड़ हो गई थी। अब सब लोग तो उनकी तरह बूढ़े नहीं हैं न!

आखिर किसी तरह उन्होंने काउंटर पर पास बुक जमा करके टोकन ले लिया और अपनी बारी का इंतजार करने लगे। वे समझ गए थे कि उन्हें बहुत अधिक इंतजार करना पड़ेगा। वे दीवार से सट कर खड़े हो गए। सारी बेंचे तो पहले ही ठसाठस भरी हुई थीं। अब इस जमाने में इतनी किसको समझ थी कि एक बूढ़े और कमजोर व्यक्ति के लिए सीट खाली कर दे।

बैंक के एक कोने में प्रबंधक का कक्ष था। प्रबंधक की कुर्सी पर एक सुदर्शन (स्मार्ट) सा युवक बैठा, कक्ष में लगे शीशे से, बैंक का सारा नजारा देख रहा था। सहसा उसकी नजर दीवार से सटे खड़े, थर-थर काँपते एक बुजुर्ग पर पड़ी। वे उन्हें कुछ जाने-पहचाने से लगे। उन्होंने चपरासी को भेज कर उन बुजुर्ग को अपने कमरे में बुलाया और उनसे यहाँ आने का कारण पूछा।

दीनानाथ आश्चर्यचकित थे। वे उसे पहचान नहीं पा रहे थे। वे जानते थे कि इस बैंक में उनका कोई परिचित या रिश्तेदार नहीं है। जब उन्होंने अपने आने का कारण बताया तो प्रबंधक ने तुरंत चपरासी को टोकन देकर दीनानाथ जी का काम शीघ्र करवा देने को कहा।

कमरे में रूम हीटर (ऊष्मक) जल रहा था जिस कारण वहाँ का वातावरण गर्म था। वे कुर्सी पर आराम से बैठ गए। अब उन्हें सर्दी से राहत

मिल गई थी। तभी चपरासी चाय ले आया।

''लीजिए आचार्य जी!''प्रबंधक ने चाय का प्याला उनकी तरफ बढ़ाते हुए कहा।

'लेकिन बेटा...'' उन्होंने कुछ कहना चाहा।

'ठीक है...आप मुझे पहचान नहीं पा रहे होंगे, आचार्य जी, मैं बहुत पहले आपकी कक्षा में पढ़ने वाला शैतान छात्र रोहित हूँ।

दीनानाथ जी सचमुच उसे अपनी याददाश्त पर जोर देने पर भी नहीं पहचान पा रहे थे। क्योंकि अब वे बहुत बूढ़े हो चुके थे न!

लेकिन प्रबंधक महोदय उन्हें बात रहे थे, आचार्य जी मैं हमेशा बात-बात पर शरारत किया करता था। आप मुझ से बहुत परेशान रहा करते थे। पर फिर भी आप मुझे सुधारने का प्रयास करते रहे। अन्ततः एक दिन मैं आपकी डाँट, मार व प्यार पाकर सुधर ही गया। आज इस बैंक में आपके आशीर्वाद से प्रबंधक हूँ।''

उसकी बातें सुनकर दीनानाथ जी खुशी से गद्गद हो गए। वे भावविह्वल हो कर बोले- ''बेटा, मुझे खुशी है कि मेरी डॉट, मार, प्यार और अनुशासन ने कई बच्चों को इस काबिल बनाया कि वे आज तुम्हारे ही समान ऊँचे पदों पर हैं। वास्तविकता यह है कि कोई भी शिक्षक अपने छात्रों को कभी भी बुरी भावना से नहीं डाँटता-फटकारता है।

यह कह कर दीनानाथ जी दो क्षण को रुके फिर बड़े ही मुग्ध भाव से पुनः कहने लगे, तुम ने कुम्हार को कभी न कभी घड़ा बनाते हुए तो देखा ही होगा। पहले तो वह मिट्टी को बुरी तरह रौंदता है, फिर उसे आकर देने के लिए भीतर से प्यार से थपथपाता भी है और बाहर से उस पर चोट भी करता है। तभी वह उसे सुंदर और मजबूत बना पाता है। वैसे ही एक ईमानदार शिक्षक भी अपने छात्रों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए उसे डाँटता फटकारता है।''

जी आचार्य जी, अब तो मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है।'' प्रबंधक महोदय ने कहा।

दीनानाथ चाय पी चुके थे। ठीक उसी समय चपरासी उनके रुपए भी ले कर आ गया। वे घर जाने के लिए उठ खड़े हुए। प्रबंधक ने भी उठकर उनके पैर छुए और बैंक के दरवाजे तक छोड़ने भी आए।

घर जाते समय दीनानाथ बहुत खुश थे। इसलिए नहीं कि उनका काम इतनी जल्दी हो गया था, बल्कि इसलिए कि उनका एक और विद्यार्थी अपनी मंजिल तक पहुंचने का श्रेय उन्हें दे रहा था। एक अध्यापक के लिए इससे अधिक गर्व की बात भला और क्या हो सकती थी।

इस समय उन्हें सर्दी का अहसास तक नहीं हो रहा था। खुशी के कारण रास्ता बहुत जल्दी कट गया। उन्हें इस बात का पता ही नहीं चला कि उनका घर कब आ गया है।

• **फर्रुखाबाद (उ.प्र.)**

देश हमारा सबसे न्यारा

कविता : डॉ. राजेन्द्र पंजियार

देश हमारा सबसे न्यारा
हम सबकी आंखों का तारा
इसकी महिमा जग जाहिर है
वीरों ने है इसे संवारा।
कर्मवीर हम धर्मवीर हम
दानवीर हम युद्धवीर हम
कोई हमसे टकराया तो
फिर न दिखेगा कहीं दुबारा।
जिह्वा पर हैं शास्त्र हमारे
और पीठ पर आयुध सारे
नहीं मोम की गुड़िया हैं हम
रिपु के लिए अग्नि की धारा।
प्रगति पंथ पर बढ़े चरण जब
गिरतों को भी दिया सहारा
जो भी दीन दुखी वंचित हैं
उन्हें उठाना लक्ष्य हमारा।
राम कृष्ण गौतम तीर्थंकर
ऋषि मुनियों की है यह धरती
बापू के सपनों का भारत
बने यही आदर्श हमारा।।

• भागलपुर (बिहार)

सही उत्तर

।। संस्कृति प्रश्नमाला ।।

(१) जाम्बवंत (२) रुक्मी (३) कर्पूर द्वीप (४) काशी (बनारस) (५) १ लाख श्लोक तथा १८ पर्व (६) पाटलिपुत्र (७) अल-बरुनी (८) तात्या टोपे (९) रावल खुमाण (१०) श्री निवास रामनानुजम्

गर्मी आई

कविता : सुषमा दुबे

आई आई गर्मी आई
आई आई गर्मी आई
कैसे कैसे खेल लाई
आओ चुन्नी खेले खेल
सोनू क्या तुम कंचे लाई
आई आई गर्मी आई

बबलू आओ हम छुप जाएं
रानी तुम ढूंढोगी हमको
कजरी देखो वहाँ न जाओ
मुन्नी तुम तो देर से आई
आई आई गर्मी आई
मोनू इतनी दूर खड़े क्यों

आओ तुम भी संग में खेलो
गुड़िया का हम ब्याह रचाये
देखो आशु गुड्डा लाई
आई आई गर्मी आई
शैलू बल्ले से तुम खेलो
गुड्डी ये गेंद तुम लेलो
नन्नू जाओ पकड़ो इसको
देखो रानू क्या-क्या लाई
आई आई गर्मी आई

● इन्दौर (म.प्र.)

सही उत्तर

।। छोटे से बड़ा ।।

७, ३, २, ८, १०,
१, ६, २, ५, ९

।। मनोरंजक चित्र पहेलियाँ ।।

परछाई : (१) कंगारू (२) मछली (३) हिरण
(४) चमगादड़ (५) शेर (६) जिराफ (७) चूहा

पहचानकर बताओ

मुँह गेण्डे का, धड़ गाय का,
पूँछ शेर की और पैर ऊँट के।

श्री गुरुजी की विनयशीलता

प्रसंग : श्यामसुन्दर सुमन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) वृद्धजनों एवं धार्मिक विभूतियों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए तत्पर रहा करते थे।

सन् १९७१ की बात है। गुरुजी इन्दौर पधारे। एक स्वयंसेवक अपने आवास पर उन्हें भोजन कराने ले गया। भोजन के उपरान्त देश व समाज की वर्तमान स्थिति पर चर्चा होती रही। लौटते समय वे सभी के साथ तीसरी मंजिल से नीचे आ गए। अचानक उन्हें याद आया कि मैं स्वयंसेवक की माताजी को प्रणाम करना तो भूल ही गया।

स्वयंसेवक ने कहा– ''मैं माताजी को यहाँ बुला लेता हूं।'' गुरुजी बोले– ''अरे, जिनके चरण वंदन करके आशीर्वाद लेना है, उन्हें नीचे बुलाना कहाँ की बुद्धिमानी है।'' वे स्वयं तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ कर तीसरी मंजिल पर पहुँचे तथा माताजी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। वृद्ध माँ के प्रति गुरुजी की श्रद्धाभावना देखकर सभी हतप्रभ रह गए।

● भीलवाड़ा (राज.)

आपकी पाती

आप सभी विद्वान मनीषी,
साहित्य ध्वजा फहरायें।
संस्कार बीजारोपण से,
समृद्ध करें शुभपरम्परायें।
संस्कृति गंगा की धारायें,
अविरल यहाँ बहायें।
देवपुत्र की यात्रा शुभ हो,
अंतरिक्ष तक पहुचायें।

● चद्रप्रकाश पटसारिया, इन्दरगढ़ (म.प्र.)

✦✦✦✦

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक बालोपयोगी, स्तरीय पठनीय व मनोरंजक हैं। आवरण मनमोहक व चयन उत्तम संपादन प्रशंसनीय है। हार्दिक बधाई स्वीकारें।

● अशोक आनन, मक्सी (म.प्र.)

✦✦✦✦

देवपुत्र के माध्यम से आप देश के नौनिहालों का चरित्र निर्माण पिछले ३८ वर्षों से कर रहे हैं। यह संस्कृति बचाने व संस्कार निर्माण का एक तरह से अश्वमेध यज्ञ जैसा कार्य है। देवपुत्र का देश ऋणी रहेगा इसमें कोई दो राय नहीं है।

● पवन कुमार पहाड़िया, डेह (राज.)

डाक्टर की सलाह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

पिताजी आप बहुत अच्छे हैं

कहानी : सुमन ओबेरॉय

राहुल माता-पिता की इकलौती संतान है। बेहद लाड़ला। मात-पिता की आँखों का तारा। पढ़ने में होशियार। माता-पिता उसकी हर इच्छा पूरी करने को तत्पर रहते। समस्त सुख-सुविधायें देने का प्रयत्न करते।

मगर राहुल की एक जिद ने उसके माता-पिता को परेशान कर दिया है। वह एक सप्ताह से एक ही रट लगाए हुए है कि मुझे बाइक चाहिए। जब से उसके दोस्तों शिवम और रोहन ने बाइक खरीदी है, राहुल पर भी सोते-जागते, उठते-बैठते, बस बाइक खरीदने का भूत सवार हो गया है। उसे लगता है कि उन दोनों का कक्षा में रौब बढ़ गया है। यह उससे सहन नहीं हो पा रहा था। इसलिए उसे लग रहा था कि बाइक लेना तो जरूरी हो गया है।

राहुल आश्वस्त था कि वह जैसे ही बाइक लेने की इच्छा प्रकट करेगा, उसके माता-पिता हमेशा की तरह झट से उसकी इच्छा पूरी कर देंगे। पर उसके पिताजी ने साफ इंकार कर दिया। यह राहुल के लिए एक बड़ा झटका था। ऐसा पहली बार हुआ था कि पिता ने उसे किसी चीज के लिए इतनी सख्ती से मना किया हो।

कुछ दिन तो वह कभी माँ और कभी पिताजी को मनाने की कोशिश करता रहा, मगर उसके पिताजी टस से मस न हुए, राहुल यह सहन नहीं कर पाया। उसके मन में आक्रोश फूट पड़ा। उसे लगता था कि मैंने इतनी बड़ी मांग तो नहीं की है जिसे पिताजी पूरी न कर सके। आखिर मैं उनकी इकलौती संतान हूँ। पिताजी कहते है कि चार-पाँच साल रुको जैसे मैं चार-पांच साल बाद ज्यादा समझदार हो जाऊंगा। अरे, अब मैं बड़ा हो गया हूँ। सत्रह साल का हो गया हूँ। रोहन और शिवम् भी तो मेरी ही उम्र के हैं - उनके पिताजी ने तो झट से बाइक दिलवा दी। रोहन के पिताजी ने तो वादा किया है कि वह दो साल बाद उसे हार्ले डेविडसन दिलवा देंगे। और एक हमारे माता-पिता हैं कि...। अरे भई होंडा ही दिलवा दो।

राहुल के मन में इन्हीं उल्टी-सीधी बातों ने उथल-पुथल मचा रखी थी, पिताजी के प्रति गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उसने माँ-पिताजी दोनों से बात करना लगभग बंद कर दिया। अपना कमरा बंद कर के पड़ा रहता। पढ़ाई से भी मन उचाट होता जा रहा था।

राहुल की हालत उसकी माँ से देखी न जाती। वह बहुत परेशान हो गई। हिम्मत जुटाकर उन्होंने राहुल के पिताजी से कहा कि आप इसे बाइक दिलवा दें। मैं जिम्मेदारी लेती हूँ कि ज्यादा नहीं चलाएगा। सुनते ही राहुल के पिताजी आग बबूला हो गए। गुस्से से बोले वह तो बच्चा है कम से कम तुम तो उसकी तरफदारी मत करो। समझाओ उसे। अभी वह कम उम्र का है अभी तो जनाब की लाइसेंस की भी उम्र भी नहीं हुई है। हाथ में बाइक आते ही हवा में उड़ने लगेगा। अपने साथ दूसरों की भी जान जोखिम में डालेगा। अखबार खोलकर देख लो, सड़क दुर्घटनाओं में बाइक सवार लड़कों की टक्करों की ओर मौतों की खबरें सबसे ज्यादा होती है, यह उम्र ही ऐसी होती है भाई कान में लगा मोबाईल, हवा से बातें करती बाइक, होश कहाँ रहता है? मैं इतना बड़ा खतरा नहीं ले सकता। उसे कहो अभी चार छः साल रुकना पड़ेगा।

चार छः साल सुनकर राहुल का दिमाग गरम हो गया। निराशा और हताशा उसे पागल कर रही थी। इतने में उसके दोस्त शिवम् का फोन आया कि झमाझम बरसात हो रही है, चल घूमने चलते हैं।

राहुल ने गुस्से में माँ पिताजी को सुनाते हुए कहा- आप तो मुझे बाइक ले कर दे नहीं सकते। शिवम और रोहन के पिताजी को देखो, उन्होंने फटाफट बाइक खरीद कर दे दी। वह सब आज बाइक पर पिकनिक मनाने जा रहे हैं, मैं भी उनके साथ जा रहा हूँ।

इतना सुनते ही उसके पिताजी भड़क गए। बाहर कहीं काम से जाने के लिए तैयार हो रहे थे। वहीं बैठ गए और कड़क कर बोले। ''तू कहीं नहीं जा रहा।'' मना कर दे उनको, मैं भी दिन भर यहीं बैठा रहूंगा। देखता हूँ तू बाहर कैसे निकलता

उनके पिताजी ने तो झट से बाइक दिलवा दी। रोहन के पिताजी ने तो वादा किया है कि वह दो साल बाद उसे हार्ले डेविडसन दिलवा देंगे। ओर एक हमारे माता–पिता हैं कि...। अरे भई होंडा ही दिलवा दो।

राहुल के मन में इन्ही उल्टी–सीधी बातों ने उथल–पुथल मचा रखी थी, पिताजी के प्रति गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उसने माँ–पिताजी दोनों से बात करना लगभग बंद कर दिया। अपना कमरा बंद कर के पड़ा रहता। पढ़ाई से भी मन उचाट होता जा रहा था।

राहुल की हालत उसकी माँ से देखी न जाती। वह बहुत परेशान हो गई। हिम्मत जुटाकर उन्होंने राहुल के पिताजी से कहा कि आप इसे बाइक दिलवा दें। मैं जिम्मेदारी लेती हूँ कि ज्यादा नहीं चलाएगा। सुनते ही राहुल के पिताजी आग बबूला हो गए। गुस्से से बोले वह तो बच्चा है कम से कम तुम तो उसकी तरफदारी मत करो। समझाओ उसे। अभी वह कम उम्र का है अभी तो जनाब की लाइसेंस की भी उम्र भी नहीं हुई है। हाथ में बाइक आते ही हवा में उड़ने लगेगा। अपने साथ दूसरों की भी जान जोखिम में डालेगा। अखबार खोलकर देख लो, सड़क दुर्घटनाओं में बाइक सवार लड़कों की टक्करों की ओर मौतों की खबरें सबसे ज्यादा होती है, यह उम्र ही ऐसी होती है भाई कान में लगा मोबाईल, हवा से बातें करती बाइक, होश कहाँ रहता है? मैं इतना बड़ा खतरा नहीं ले सकता। उसे कहो अभी चार छः साल रुकना पड़ेगा।

चार छः साल सुनकर राहुल का दिमाग गरम हो गया। निराशा और हताशा उसे पागल कर रही थी। इतने में उसके दोस्त शिवम् का फोन आया कि झमाझम बरसात हो रही है, चल घूमने चलते हैं।

राहुल ने गुस्से में माँ पिताजी को सुनाते हुए कहा– आप तो मुझे बाइक ले कर दे नहीं सकते। शिवम और रोहन के पिताजी को देखो, उन्होंने फटाफट बाइक खरीद कर दे दी। वह सब आज बाइक पर पिकनिक मनाने जा रहे हैं, मैं भी उनके साथ जा रहा हूँ।

इतना सुनते ही उसके पिताजी भड़क गए। बाहर कहीं काम से जाने के लिए तैयार हो रहे थे। वहीं बैठ गए और कड़क कर बोले। ''तू कहीं नहीं जा रहा।'' मना कर दे उनको, मैं भी दिन भर यही बैठा रहूंगा। देखता हूँ तू बाहर कैसे निकलता है।''

राहुल पैर पटकता, भुनभुनाता हुआ अपने कमरे में चला गया। उसने भड़ाक से दरवाजा बंद कर लिया। माँ बाहर से ही उसे समझाती रहीं कि बारिश के मौसम में इस तरह सड़कों पर घूमना अच्छा नहीं है। राहुल गुस्से से उफन रहा था। कोई तर्क उस पर असर नहीं डाल रहा था।

उसके दोस्त राहुल को लेने आए।पर पिताजी ने मना कर दिया साथ ही उन्हें भी समझाया कि खराब मौसम में इस तरह तीन–तीन लड़कों का एक बाइक पर घूमना अच्छा नहीं है, और फिर तुम्हारे पास लाइसेंस भी नहीं है। दोस्तों को यह समझाइश अच्छी नहीं लगी। उन की बातों को अनसुना कर वह फर्राटे भरते हुए निकल लिए।

राहुल के घर दिन भर चुप्पी छाई रही। माँ घर के कामों में स्वयं को उलझाये रही, पिताजी अखबारों में गर्दन घुसाए रहे।

लेकिन वह शाम कहर बन कर आई, पूरे मुहल्ले में हड़कंप मच गया जब राहुल के दोस्तों के एक्सीडेंट की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। जब छः दोस्तों में से चार के शव एक साथ लाए गए तो कोई आँख ऐसी न थी जिससे आंसुओं का सैलाब न उमड़ा हो, बाकी दो अस्पताल में पड़े थे, उनकी हालात गंभीर थी।

उन्हीं के बयानों के आधार पर पता चला कि बाइक पर तीन–तीन लड़के सवार थे, दोनों बाइक चालक बहुत तेज रफ्तार से आपस में रेस लगा रहे थे। डिवाईडर से टकराकर आगे वाली बाइक हवा में उछली और गिरी, पीछे से तेज गति से आती दूसरी बाइक उससे टकरा कर औंधी गिरी, दो लड़कों की जान तो बच गई मगर उनके शरीर का क्या हाल होगा– कह नहीं सकते।

चार शव एक साथ देखकर राहुल की रुह काँप गई, वह बिलख कर रो पड़ा। पिताजी ने उसे गले लगा कर कहा– ''राहुल ऐसे हादसे हमेशा नहीं होते और न ही हर एक के साथ होते हैं, पर हर काम करने की एक सही उम्र होती है, सावधानी रखना बेहद जरूरी होता है।'' राहुल भरे गले से केवल इतना ही कह पाया, ''पिताजी आप बहुत अच्छे हैं।''

• **भोपाल (म.प्र.)**

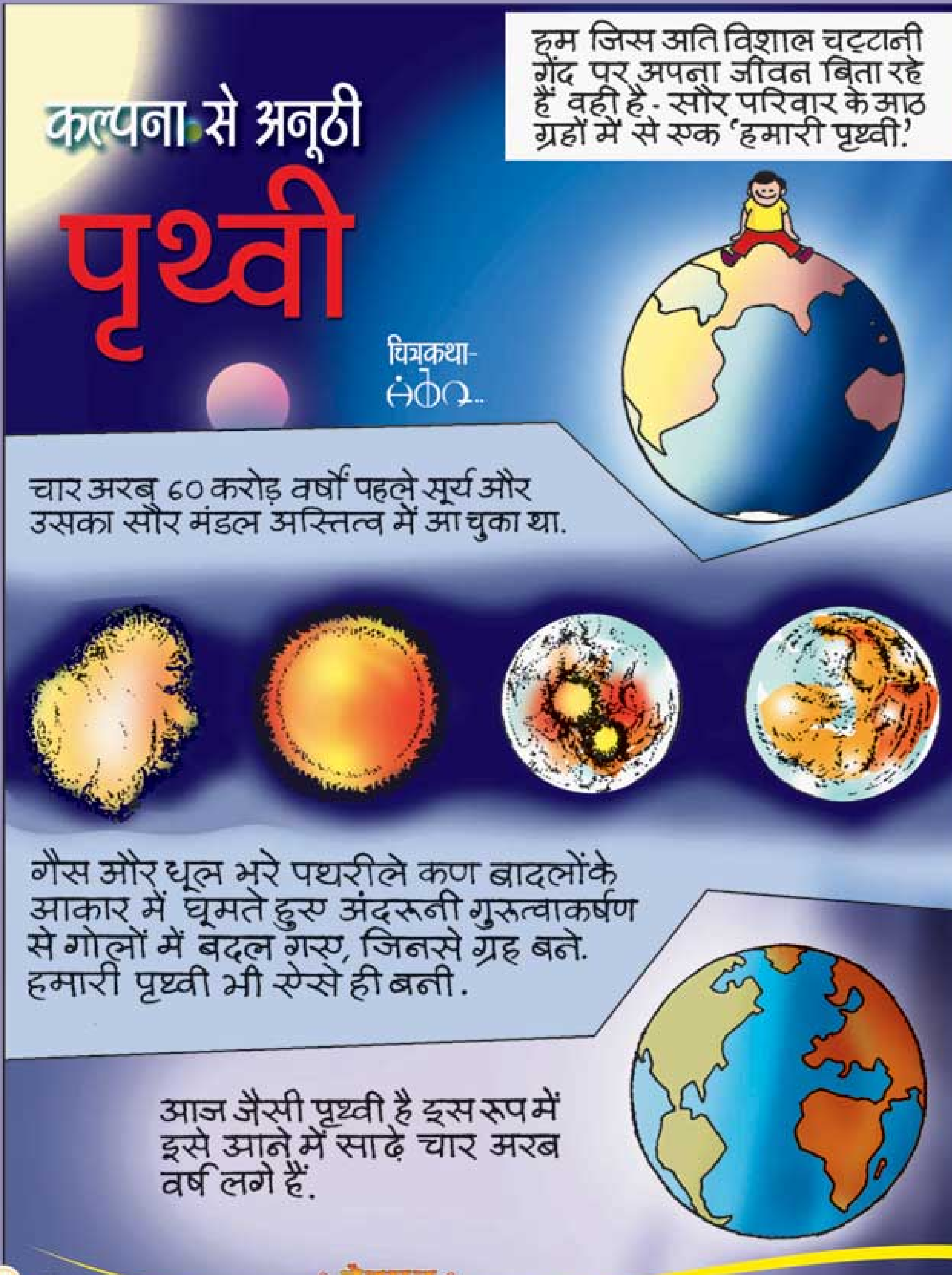
कल्पना से अनूठी
पृथ्वी
चित्रकथा-
हम जिस अति विशाल चट्टानी गेंद पर अपना जीवन बिता रहे हैं वही है - सौर परिवार के आठ ग्रहों में से एक 'हमारी पृथ्वी.'
चार अरब 60 करोड़ वर्षों पहले सूर्य और उसका सौर मंडल अस्तित्व में आ चुका था.
गैस और धूल भरे पथरीले कण बादलों के आकार में घूमते हुए अंदरूनी गुरुत्वाकर्षण से गोलों में बदल गए, जिनसे ग्रह बने. हमारी पृथ्वी भी ऐसे ही बनी.
आज जैसी पृथ्वी है इस रूप में इसे आने में साढ़े चार अरब वर्ष लगे हैं.

लोगों ने हमेशा पृथ्वी से बाहरी तरफ ही यात्राएं की है...

लेकिन अगर ऐसा कोई तरीका होता जिससे पृथ्वी के अंदर यात्रा की जा सकती तो..

पृथ्वी के चार मुख्य हिस्से मिलते. पहला जिसे CRUST यानी पर्पटी कहते हैं. महासागर, धरती, पहाड़ सब इस पर्पटी में स्थित हैं. यह लगभग 10 से 60 किलोमीटर तक मोटी है.

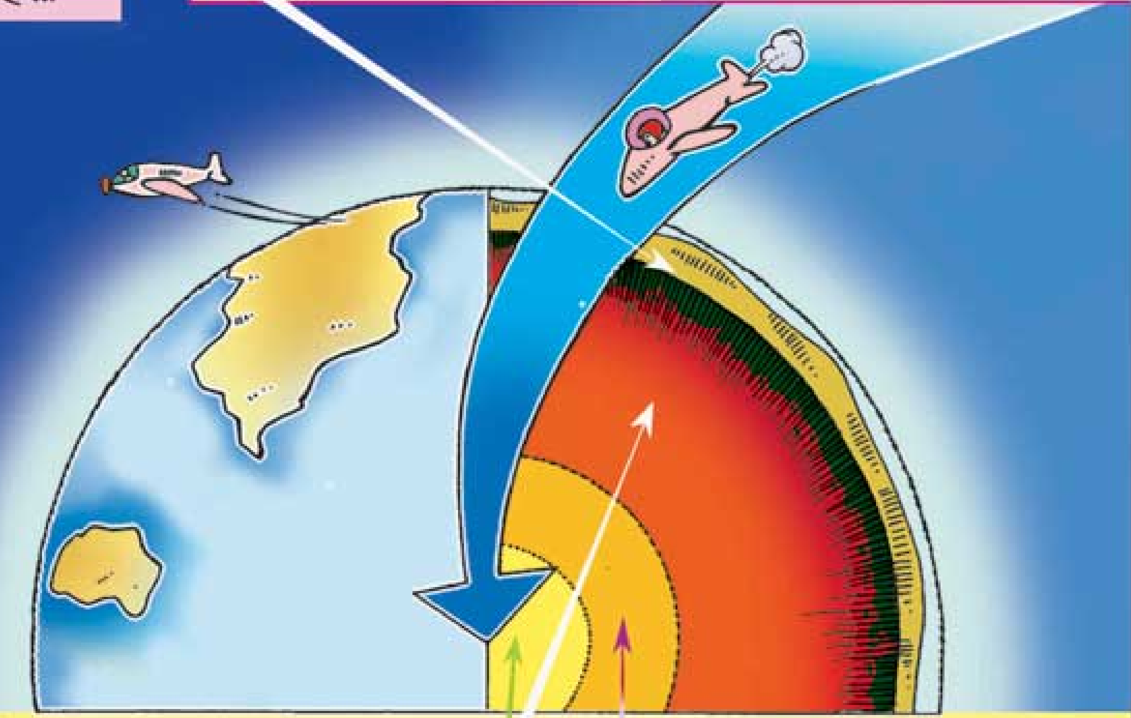

पर्पटी को भेदकर अंदर घुसने पर पता चलता कि पूरी पृथ्वी ही चट्टान की तरह सख्त नहीं है.

अगले हिस्से मेंटल (MANTLE) पर पहुंचने पर पिघली हुई चट्टानें लगातार बहती हुई मिलती, जिसे 'मैग्मा' कहा जाता है.

जैसे-जैसे तुम गहरे उतरोगे पृथ्वी के अंदर का वातावरण गर्म से और गर्म होता चला जाएगा.

करीब 6400 किलोमीटर की अंदरूनी यात्रा के बाद तुम पृथ्वी के अन्तर्भाग यानी CORE तक पहुंच जाओगे.

यह दो हिस्सों में है बाहरी क्रोड (OUTER CORE) और अंदरूनी क्रोड. (INNER CORE) अंदरूनी क्रोड का तापमान 5500 डिग्री सेंटीग्रेड है और यहां पिघला लोहा उबल रहा है.

जाहिर है, पृथ्वी का भीतरी भाग जीवन के लिए सुरक्षित नहीं है.

पृथ्वी की बाहरी सतह पर जीवन संभव बनाया वायुमंडल ने. पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद ओज़ोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक नहीं पहुंचने देती और उसके वायुमंडल में सभी उल्काएं घर्षण से जलकर राख के कणों में बदल जाती हैं.
ये राख के कण पृथ्वी पर गिरते हैं. जानकर हैरानी हो सकती है कि ऐसी गिर रही राख से पृथ्वी का वजन प्रतिदिन लगभग 27 टन बढ़ रहा है.
पृथ्वी के पास दो अतुलनीय शक्तियां भी हैं- एक तो उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति, जिसके बल से हम पृथ्वी पर टिके हैं और चंद्रमा उसकी परिक्रमा कर रहा है..
और दूसरी उसकी चुम्बकीय शक्ति, जो उसके मध्य में उबलते लोहे में मौजूद असंख्य इलेक्ट्रॉन्स की वजह से उसे मिली है. तभी तो हर चुम्बक, कुतुबनुमा की सुई उत्तर की ओर रुककर दिशा का सही ज्ञान कराती है.

पृथ्वी की बाहरी सतह पर जीवन संभव बनाया वायुमंडल ने. पृथ्वी के वायुमंडल में मौजूद ओज़ोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक नहीं पहुंचने देती और उसके वायुमंडल में सभी उल्काएं घर्षण से जलकर राख के कणों में बदल जाती है.
ये राख के कण पृथ्वी पर गिरते हैं. जानकर हैरानी हो सकती है कि ऐसी गिर रही राख से पृथ्वी का वजन प्रतिदिन लगभग 27 टन बढ़ रहा है.
पृथ्वी के पास दो अतुलनीय शक्तियां भी हैं- एक तो उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति, जिसके बल से हम पृथ्वी पर टिके हैं और चंद्रमा उसकी परिक्रमा कर रहा है..
और दूसरी उसकी चुम्बकीय शक्ति, जो उसके मध्य में उबलते लोहे में मौजूद असंख्य इलेक्ट्रॉन्स की वजह से उसे मिली है. तभी तो हर चुम्बक, कुतुबनुमा की सुई उत्तर की ओर रुककर दिशा का सही ज्ञान कराती है.

फिर आई छुट्टियाँ

कविता : डॉ. हरीश निगम

खोली है मस्ती ने
खुशियों की मुट्ठियाँ
फिर आई छुट्टियाँ।

बस्तों को चैन मिला
हमको आराम
अब चाहे ऊधम हो
सुबहों से शाम,

अब कैरम-शतरंज जमे
चाहे हो गुट्टियाँ
फिर आई छुट्टियाँ

यहां- वहाँ सैर करें
या खेलें खेल,
किन्तु हमें रखना है
सबसे ही मेल,

याद रखें मिट्टी को
भूले हम कुट्टियाँ
फिर आई छुट्टियाँ।

• सतना (म.प्र.)

बिन्दु मिलाओ-रंग भरो

• राजेश गुर्जर

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

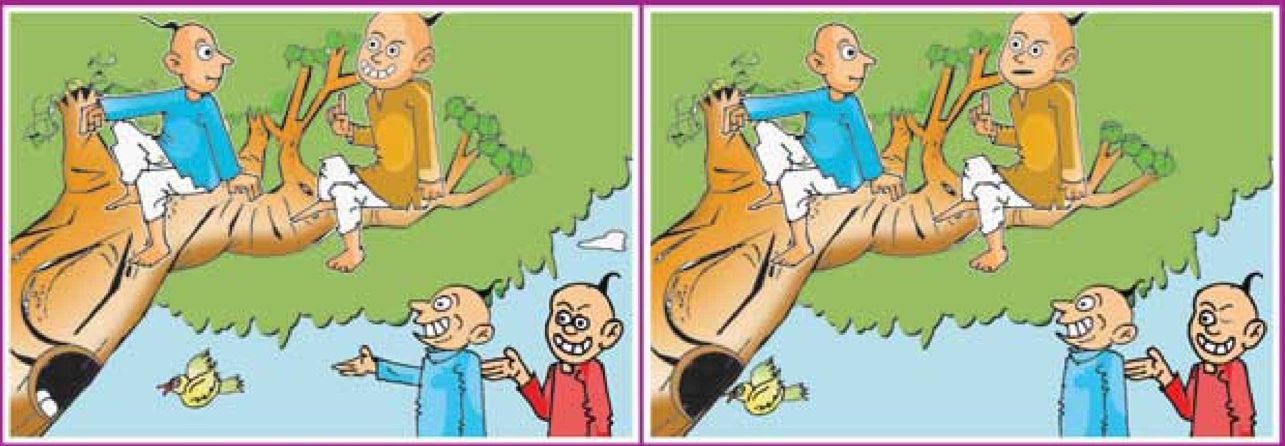

(उत्तर इसी अंक में)

मुस्कराइए जी!

• दिलीप भाटिया

अध्यापिका - शाला का सबसे अच्छा लाभ बतलाइए।
छात्रा - घर पर निरन्तर डांटने वाली माताश्री की डांट से राहत मिलती है। शाला में तो डांटने पर सरकार ने प्रतिबंध लगा ही रखा है, इसलिए हमें शाला में थोड़ा आराम चैन मिल जाता है।

****

स्वच्छता अभियान पर विद्यालय निबंध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित होने पर एक छात्र की प्राचार्य केसमक्ष अपील- श्रीमान! मेरी पूरी कॉपी खाली थी मेरी काफी सबसे अधिक साफ थी प्रथम पुरस्कार का अधिकारी हूँ मैं।

****

शाला से लौटकर बेटे का माँ से अनुरोध - माँ! विद्यालय में एक सज्जन भाषण देने आए थे- शिक्षा सबसे अनमोल गहना है- आप कृपया मेरी सारी अंकसूचियाँ अपने गहनों के साथ बैंक के लॉकर में रख दीजिएगा।

- रावतभाटा (राज.)

सही उत्तर

चित्रों में आठ अंतर बताओ

(१) एक बच्चे की चोटी गायब है। (२) उसके सामने बैठे बच्चे की हँसी गायब है। (३) उसके पीछे पत्ते कम है। (४) चिड़िया की कोटर से दूरी में अंतर है। (५) नीचे के लड़के का हाथ गायब है। (६) पीछे के लड़के की एक आँख में अंतर है।(७) चिड़िया के अण्डे गायब है। (८) पेड़ के बाजू में छोटा बादल का टुकड़ा गायब है।

शब्दरस

भारती मसानिया

बाप बेटा दो, रोटी बनाई तीन।
बराबर बाँटों, लेकिन रोटी तोड़ना नहीं है।

****

एक बार अंगद ने रावण को उपदेश दिया
रावण ने समझा–
पाप करे सुख होत है, पाप करे दुख जात।
पाप करे से हरि मिले, पाप करो, दिन रात।।
अंगद ने कहा –
पा पकरे सुख होत है, पा पकरे दुख जात।
पा पकरे से हरि मिले, पा पकरो दिन रात।।
अर्थात – हे रावण – उस परब्रह्म परमात्मा राम के पैर पकड़ने से (शरण में जाने से) सुख होता है व दुख दूर हो जाता है, उनके पैर पकड़ने से हरि मिलते हैं अतः दिन रात उन्हीं के चरणों को स्पर्श करो।
(पा = पैर)

• आगर मालवा (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

मेहनत का फल

कहानी : अभिषेक शर्मा

बहुत पहले की बात है, एक गांव में भोला नाम का एक गरीब आदमी रहता था। उसके पास थोड़ी बहुत जमीन थी पर वह खेती व अन्य काम–धंधा कुछ भी नहीं करता था। उसने एक भैंस पाल रखी थी। उसी को चराता और सुबह–शाम उसका दूध निकाल कर बेच देता था। इस तरह से अपनी जीवन यापन करता था।

एक बार वह कहीं जा रहा था। भोला ने उनके चरण स्पर्श किये और उनसे पूछा– गुरुजी आप कहाँ से पधार रहे हैं? गुरुजी ने कहा कि वत्स हम बहुत दूर से आ रह हैं। हमें बहुत भूख लग रही है, और हम भोजन की तलाश में है। भोला ने कहा कि गुरुजी दिन तो अस्त हो ही गया, रात होने वाली है इसलिए आप दोनों रात्रि विश्राम मेरे यहाँ करें। यह सुनकर गुरु–शिष्य दोनों प्रसन्न होकर उसके साथ घर चल दिए।

घर जाकर भोला ने भैंस का दूध निकाला और दोनों अतिथियों को गरम–गरम दूध पिलाया, उन्हें भोजन करा कर सोने के लिए बिस्तर लगा दिए।

गुरुजी ने रात में भोला से पूछा– ''भोला तुमने केवल एक भैंस ही पाल रखी है। तुम्हारे पास तो जमीन है, खेती भी है। तुम खेती क्यों नही करते?''

भोला ने कहा– ''गुरुजी खेती में धूप बहुत लगती है, भयंकर ठण्ड में खेत पर जाना पड़ता है। बरसात में पानी बहुत गिरता है, इतनी मेहनत कौन करें। मैं तो अपनी इस एक भैंस के सहारे ही अपना गुजर–बसर कर लेता हूँ।''

गुरुजी ने कहा– ''भोला अगर तुम परिश्रम करोगे तो तुम्हारी बहुत उन्नति होगी।''

अधिक रात्रि हो जाने पर सभी सो गए।

सुबह जब भोला की नींद खुली तो देखा कि गुरु और शिष्य दोनों नहीं है। दूध दुहने भैंस के पास गया तो भैंस वहाँ नहीं थी। उसे किसी ने खूंटे से खोल कर भगा दिया था। भोला को बहुत दुःख हुआ। किन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी। अब वह कठिन परिश्रम करने लगा। स्वयं खेतों में हांक जोत कर फसल पैदा करने लगा।

कई वर्षों के बाद एक बार फिर वही गुरू और शिष्य उसी ग्राम में आए। उन्होंने गांव वालों से पूछा– ''अरे पहले यहाँ एक एक झोपड़ी थी वह नहीं दिख रही है? और उसमें रहने वाले ये सब कहाँ गए?

इतने में ही भोला वहाँ आ गया। उसने गुरु शिष्य दोनों को पहचान लिया। वह दोनों के चरणों में गिर गया। उसने कहा– ''गुरुजी मैं ही भोला हूँ'' आपके ही आशीर्वाद से आज झोंपड़ी की जगह पर यह पक्का मकान बना है। कई गायें व भैंसे है। बढ़िया दुकान है, घर में टी.वी., फ्रिज, मोटर–सायकल, ट्रेक्टर–ट्राली है। कई नौकर है। आप दोनों तो मेरे लिए भगवान हैं। आपको बहुत–बहुत धन्यवाद।''

भोला ने उन दोनों का अच्छा स्वागत कर बढ़िया सेवा की और अच्छी दक्षिणा देकर उन्हें विदा किया।

● आगर–मालवा (म.प्र.)

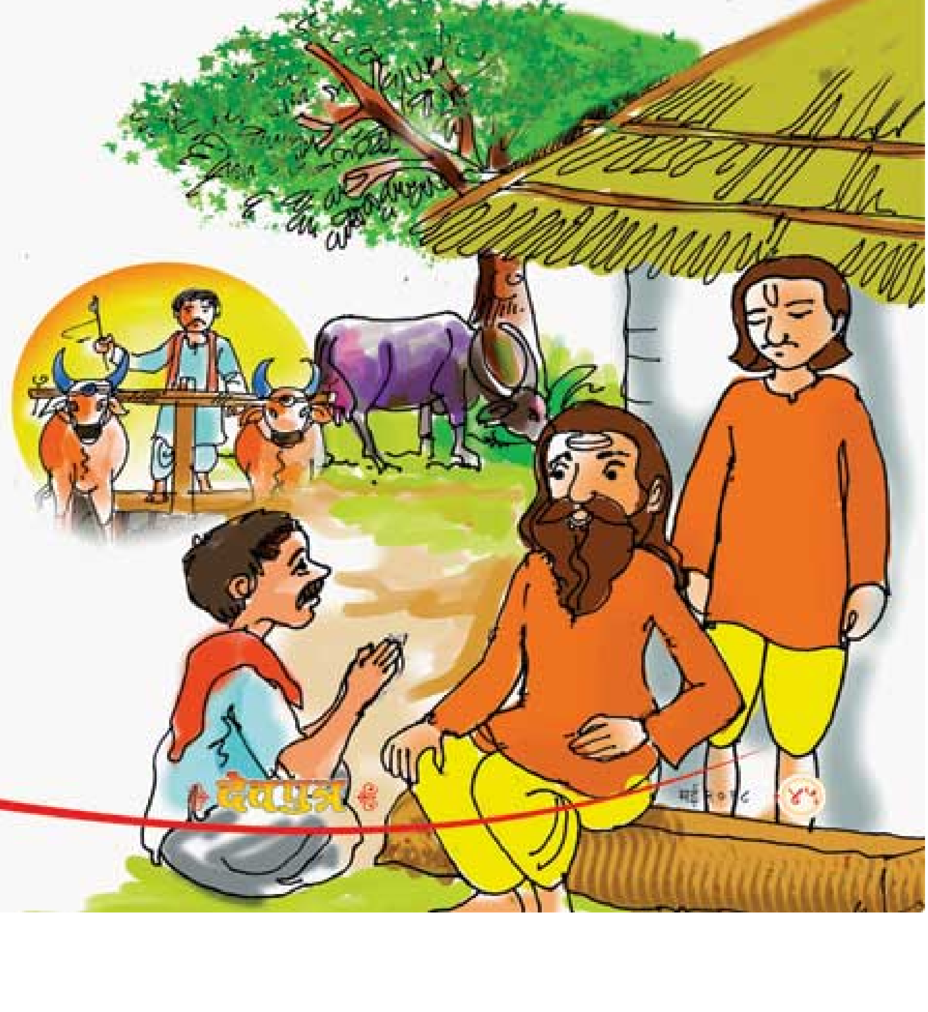

घर की बात

चित्रकथा - देवांशु वत्स

ठण्डा पानी पी लो

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

पीलो, पीलो, पीलो।
ठण्डा पानी पी लो।।
सूरज तपता भोर से
गरमी लगती जोर से
पूछे कोई मोर से
पूछे कोई ढोर से
प्यासा कौआ सूखे
ताल-तलैया भी लो
विद्यालय सब बन्द हैं
हम बच्चे स्वच्छंद हैं
छुट्टी के दिन आ गए
और पढ़ाई बन्द है।
बाबा चलो पहाड़ पर।
अम्मा जी को भी लो।।
आओ नाचें गाएँ।
मिलकर मौज मनाएँ।
छोड़े चाय पकौड़े
ठण्डी कुल्फी खाएँ।
छोड़ो रोना. धोना
हँसते-हँसते जी लो

• हरदोई (उ.प्र.)

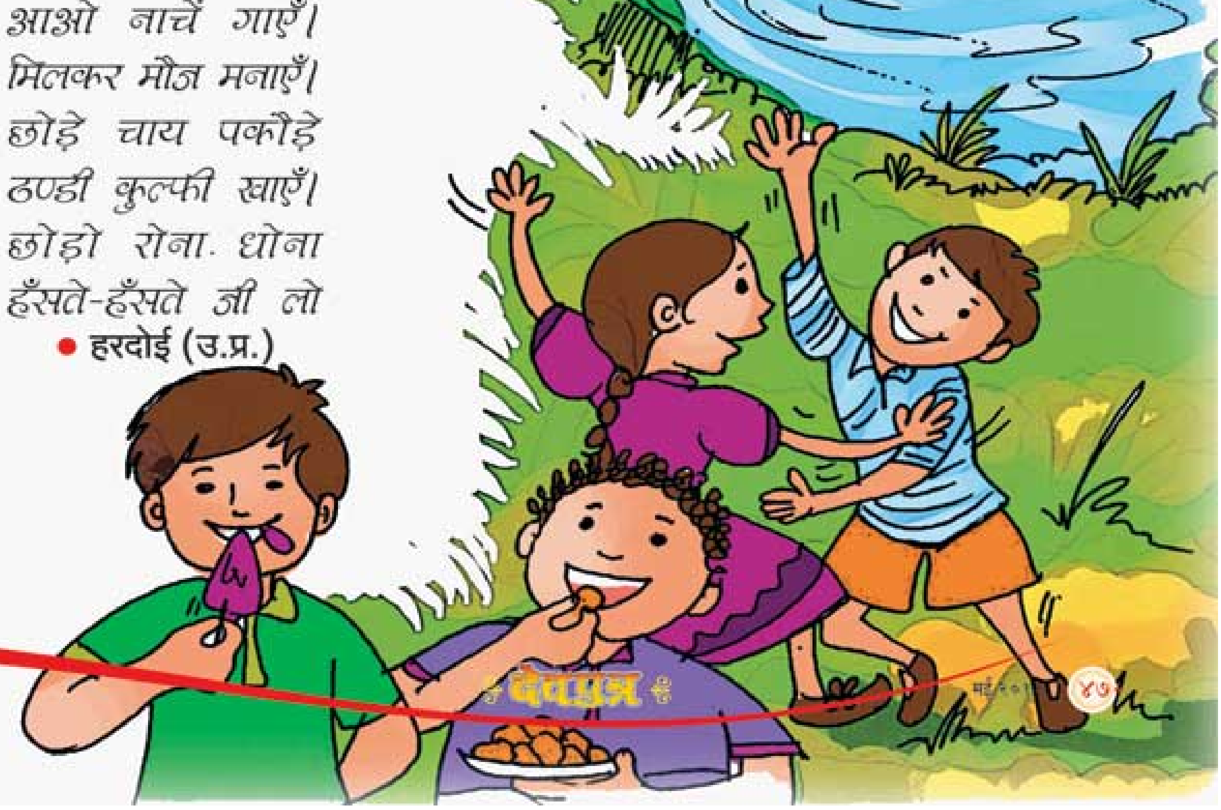

नीली चिड़िया
जंगल में शेर रोज बेवजह जोर से दहाड़ कर जानवरों को डराता रहता था
गुर्रsss
सभी जानवरों ने मिलकर ये बात नीली चिड़िया को बताई
मैं अभी शेर को मजा चखाती हूँ
नीली चिड़िया चुपके से उस शेर के कान में घुस गई और गुदगुदी करने लगी
शेर अब दहाड़ने की जगह ऊँ ऊँ करने लगा...
ऊँ...ऊँss
शेर ने जैसे ही नीली चिड़िया को पकड़ने की कोशिश की वह फुरर से उड़ गई.सारे जानवर जोर- जोर से हंसने लगे.
हा!..हा! हा! हा!!

दादी–नानी के किस्से सुना गई गोवा राज्यपाल

देवपुत्र के प्रबंध संपादक डॉ. विकास दवे को बाल साहित्य जीवन गौरव सम्मान से सम्मानित किया गोआ की राज्यपाल ने

गुरूग्राम। अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य सेवा एवं शोध संस्थान गुरुग्राम द्वारा आयोजित अभिनन्दन एवं विमोचन समारोह में गोवा की महामहिम राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा का अत्यंत स्नेहिल स्वरुप पाकर हरियाणा का साहित्य जगत अभिभूत हो उठा। वे इस आयोजन में महामहिम कम घर की दादी–नानी अधिक लग रहीं थीं। साहित्य जगत की वर्तमान समय की अनेक विकृतियों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा की स्त्री को चौराहे पर लाकर स्त्री विमर्श नहीं किया जा सकता।ठीक उसी प्रकार परिवार से पृथक करके बाल साहित्य और बाल मनोविज्ञान की कल्पना करना भी दूभर है।उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि साहित्यकार के नाते मैं फेमिनिस्ट नहीं फेमिलिस्ट हूँ। संस्थान के इस गरिमामय सारस्वत आयोजन में डॉ मृदुला सिन्हा ने संस्थान द्वारा प्रकाशित 4 पुस्तकों 'goa at a glance' पूर्णिमा राव, **'देखा घर पद्मिनी'** का–डॉ. इंदु राव, दो बाल कथा संग्रह डॉ. विकास दवे द्वारा लिखित **'दादाजी खुद बन गये कहानी'** तथा **'दुनिया सपनों की'** का विमोचन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. इंदु राव ने बताया कि इस अवसर पर नारी गौरव सम्मान श्रीमती प्रतिमा मनचंदा, शब्द साधक सम्मान डॉ. जगदम्बे वर्मा,लोक साहित्य साधक सम्मान डॉ सत्यवीर नाहड़िया, इतिहास साधना सम्मान डॉ. राजेश शर्मा और बाल साहित्य जीवन गौरव सम्मान डॉ विकास दवे को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. डी पी भारद्वाज, विशिष्ट अतिथि हरियाणा शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ जगबीर सिंह, करुणा प्रकाश, स्टारेक्स विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक दिवाकर एवं डॉ. विकास दवे मौजूद रहे। महामहिम राज्यपाल को स्मृति चिन्ह महेंद्र वैद,डॉ. हेमंत एवं उदयभान राव ने भेंट किया। आभार प्रताप सिंह ने व्यक्त किया। संचालन हार्दिक दवे ने किया।

साहित्यकार राजकुमार जैन राजन का हरियाणा में हुआ सम्मान

भिवानी। बाल कल्याण समिति, हरियाणा सरकार के सहयोग से गुगनराम ऐजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसायटी बोहल द्वारा भिवानी के आर्य समाज मंदिर सभागार में राष्ट्रीय शोध एवं साहित्य संगोष्ठी आयोजित की गई।

आकोला (राजस्थान) के सुपरिचित साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को श्रीमती सरबती देवी सिहाग साहित्य सम्मान २०१८ से विभूषित किया गया। यह सम्मान इन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट लेखन, प्रकाशन, संपादन, साहित्यकार सम्मान समारोह आयोजन, हिन्दी भाषा के विकास, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य उन्नयन के क्षेत्र में महनीय योगदान हेतु प्रदान किया गया। सम्मान प्रख्यात लेखक व शिक्षाविद् प्रो. राधेश्याम राय, बाल कल्याण समिति, हरियाणा की अध्यक्षता अयन प्रकाशन दिल्ली के निदेशक श्री भूपाल सूद, गुरु नानक कॉलेज दिल्ली की प्रो. अंजू बाला व डॉ. नरेश सिहाग ने प्रदान किये।

इस अवसर पर राजन के बाल साहित्य पर तीन शोध पत्र भी पढ़े गए।

पुस्तक परिचय

प्रख्यात बाल साहित्य मनीषी श्री प्रकाश मनु की दो महत्वपूर्ण कथा कृतियाँ

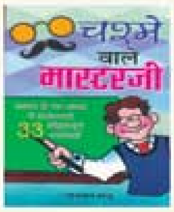

चश्मे वाले मस्टर जी – प्रकाश मनु की ताजातरीन ३३ बाल कहानियाँ जिनमें बचपन का हर रंग, हर अदांज है और नटखट से भरी कौतुकपूर्ण छबियाँ भी।

प्रकाशन – चिल्ड्रन बुक टेम्पल, सी–५५, गणेश नगर, पाण्डव नगर, दिल्ली ११००९२

मूल्य २५०/–

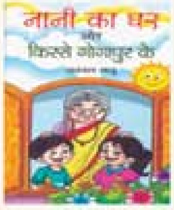

नानी का घर और किस्से गोगापुर के – डॉ प्रकाश मनु की नन्हे मुन्नों के लिए लिखी गई रोचक और रस भरी ४० बाल कहानियाँ जिनमें है बचपन के अनूठे रंग।

प्रकाशन – ज्ञानगंगा २०५ सी, चावड़ी बाजार, दिल्ली ११०००६

मूल्य ४००/–

लब्धप्रतिष्ठ बाल साहित्य श्री अश्वनी कुमार पाठक की दो नई कृतियाँ

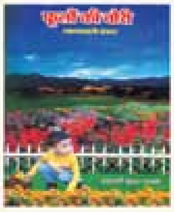

फूलो की चोरी – रोचक संवाद, सरल भाषा, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न १० विविधरंगी मनभाती बाल कहानियाँ

प्रकाशन – बाल वाटिका प्रकाशन, नंद भवन, काँवा खेड़ा पार्क, भीलवाड़ा (राज.)

मूल्य ८०/–

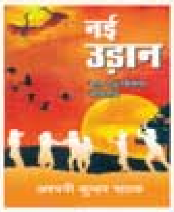

नई उड़ान – डॉ मनोरंजन के साथ संस्कृति ज्ञान, जीवन मूल्यों एवं दिशादर्शक, रसमय ४८ बाल कविताएँ, जो विशेषरूप से बालों व किशारों को लुभाएंगी।

प्रकाशन – पाथेय प्रकाशन, डॉ. हर्षकुमार तिवारी ११२, सराफा वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)

मूल्य १००/–

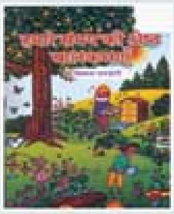

सुविख्यात लेखिका **डॉ. विमला भण्डारी** द्वारा संपादित **हमारे समय की श्रेष्ठ बाल कथाएं** एवं अत्यंत परिश्रम, अध्ययन एवं परीक्षण के उपरांत चयनित देश के नए पुराने ख्यात रचनाकारों की ३४ बाल कहानियों का संकलन है।

प्रकाशन – साहित्यगार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)

मूल्य ३००/–

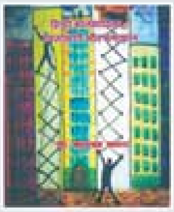

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ. शकुन्तला कालरा द्वारा हिन्दी बाल साहित्य के १७ श्रेष्ठ रचनाकारों से विचार मंथन प्रस्तुत करते साक्षात्कारों का संग्रह। **हिन्दी बालसाहित्य : जिज्ञासाएं और समाधान** बाल साहित्य शोधकर्त्ताओं व अध्येताओं के लिए उपयोगी इस पुस्तक के प्रकाशक हैं– शरारे प्रकाशन, बी–बी–१६, जनक पुरी, नई दिल्ली ११००५८

मूल्य ७५०/–

विद्या भारती अ. भा. शिक्षा संस्थान, सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के मार्गदर्शन एवं भारतीय आदर्श शिक्षण समिति, मन्दसौर द्वारा संचालित

सरस्वती विद्या मन्दिर सीबीएसई उ. मा. वि.

Affiliated to C.B.S.E. (Affiliation No. : 1030696)

www.saraswatividyamandir.in

आवासीय विद्यालय Residential School

सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान, संजीत मार्ग, मन्दसौर (म. प्र.)

छात्रावास (Hostel) में कक्षा 6 से 12 तक के 300 भैयाओं हेतु आवास, भोजन, शिक्षण एवं कोचिंग की उत्तम व्यवस्था ।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.) नई दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल म. प्र. भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त पृथक-पृथक विद्यालय

सम्पर्क करें – Mob. : अधीक्षक : 89896-04188, 70244-40312, प्राचार्य : 99935-02484, प्रबंधक : 99264-47109

E-mail : svm.cbse.mds.1314@gmail.com

विशेषताएँ -

1. आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित आवासीय भवन।
2. वाचनालय, पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षा।
3. शत् प्रतिशत, गुणात्मक परीक्षा परिणाम।
4. SPOKEN ENGLISH की नियमित कक्षाएें।
5. अभिभावक सम्मेलन, शारीरिक प्रदर्शन व विशिष्ट रंगमंचीय कार्यक्रम।
6. अलमारी, टेबल-कुर्सी, ट्रेक सूट, स्कूल बेग, स्पोर्ट शूज, बिस्तर, कोचिंग एवं शैक्षणिक भ्रमण (भारत दर्शन) की निःशुल्क सुविधा।

प्रवेश प्रारम्भ

Admission Open

Class :

6th to 12th

(Maths, Bio., Comm. & Agri.)

गोविन्द वैशंपायन	राजदीप परवाल	बालाराम गुप्ता	भारतसिंह बोराना	राघवेन्द्र देराश्री	श्रीमती सीमा भण्डारी
अध्यक्ष	सचिव	प्रबंधक	अधीक्षक	प्राचार्य CBSE Board	प्राचार्या State Board

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२० आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

Queens' College

Girls' Residential School in Indore from Classes III to XII

- Ranked no. 1 in Indore (M.P.), Ranked no.2 in India's Top Five Girls Boarding school by Education Today 2017.
- Ranked as the 2nd best Girls School in M.P. by Education World Survey.
- "CBSE New Generation School" Certified by CBSE New Delhi.

● Swimming Pool of National Standards	● Modern sports facilities available
● Sprawling Campus	● Compulsory Computer Education
● Student - Teacher Ratio 1:30	● Special remedial and enrichment classes
● Extra & competitive exam coaching facility available	● Healthy and Nutritious Food
● Smart Digital Classrooms	● Highly Qualified Faculty
● Variety of subjects available for +2 classes	● Spacious dormitories with all amenities
● Well Equiped Laboratories	● Enriched Library

Khandwa Road, Indore (M.P.) 452017, Contact No.: 0731-2877777-66-55
Visit us at: www.queenscollegeindore.org, E-mail: queenscollegeindore@rediffmail.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना

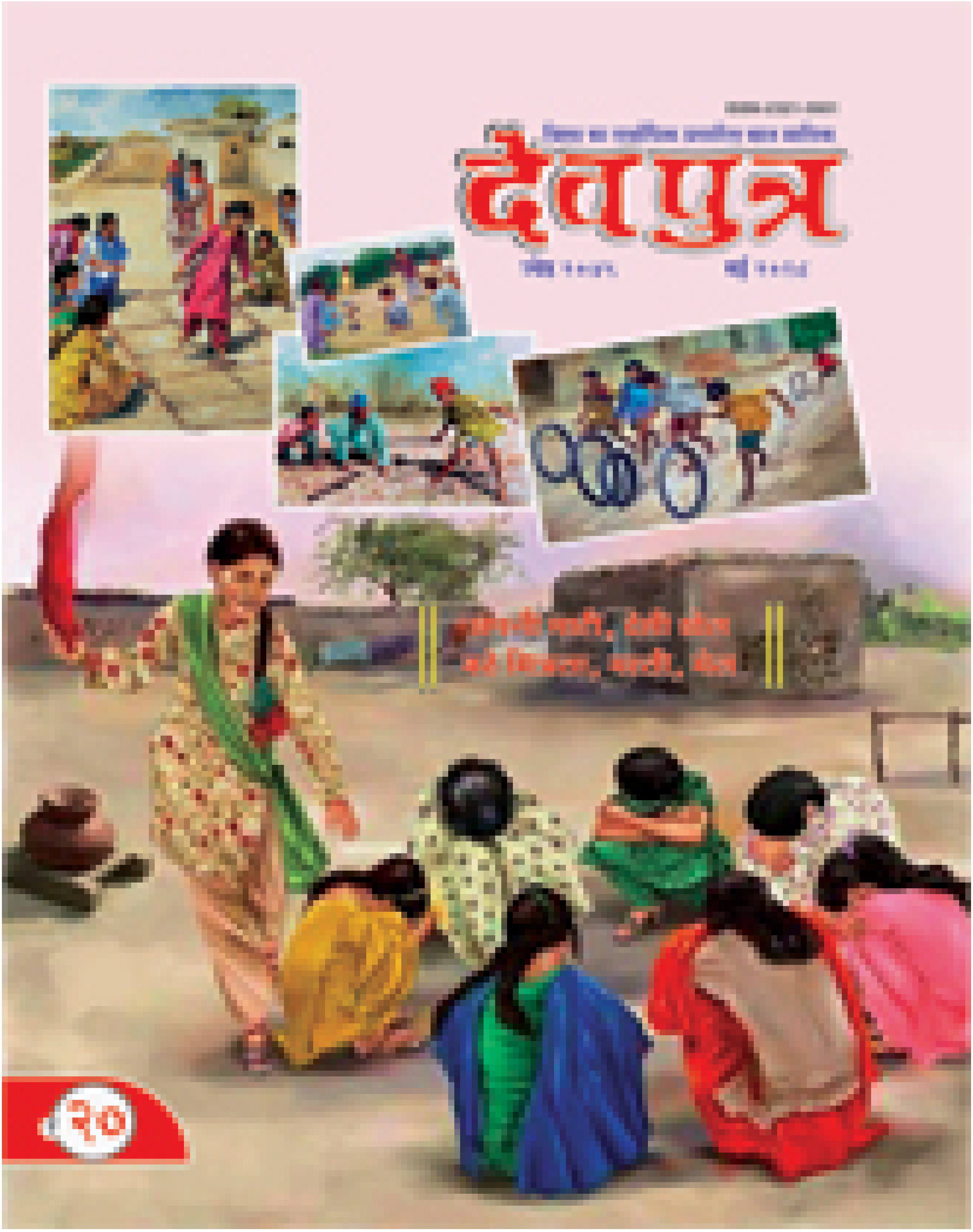
देवपुत्र